10

# मसीह का श्रेष्ठ बलिदान और परमेश्वर तक पहुंच

## ( 10:1-39 )

### मसीह के बलिदान की श्रेष्ठता (10:1-18)

10:1-18 वाली ये आयतें, ''मसीह की महायाजकाई (4:14—10:18)'' के मुख्य भाग का अन्त हैं। हमारे उद्धारकर्त्ता में महायाजक होने के लिए हर योग्यता थी और वह हारून तथा पुराने नियम के अधीन किसी भी याजक से श्रेष्ठ था।

बलिदानों का स्थान ( 10:1-10 )

10:1-10 में पुरानी वाचा के अधीन किए जाने वाले पशुओं के बलिदानों के अपर्याप्त होने पर ज़ोर दिया गया है। इस विचार को आयतें 1 से 4 में दोहराने और आयतें 5 से 9क में पवित्र शास्त्र की सीधी बात से और आयतें 9ख से 10 में पुराने सिस्टम की जगह देने के विवरण के द्वारा दिखाया गया है। इस अध्याय की शिक्षा पुराने प्रतिबिम्ब को पीछे छोड़कर असली चीज़ के साथ आराधना करने की है। तो फिर हम पुरानी वाचा के बलिदानों को क्या समझें?

वे प्रतिबिम्ब थे ( 10:1, 2 )

[1]क्योंकि व्यवस्था जिसमें आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। [2]नहीं तो उसका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए कि जब सेवा करने वाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता।

आयत 1. लेखक ने व्यवस्था को आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब [*skia*] बताया। हमारा वचन पाठ ''पशुओं के बलिदानों पर अन्तिम बात'' है।[1] क्योंकि शब्द 8:1 में आरम्भ हुए तर्क से निकाले गए निष्कर्ष का सुझाव देता है।[2] अब हमारे पास उत्तम वाचा, उत्तम बलिदान और उत्तम वेदी है। यहां से हमारे पास और विस्तार है, जिसके ऊपर उन अवधारणाओं का अर्थ मिलता है।

''प्रतिबिम्ब'' का अर्थ पुरानी वाचा की अवधारणा है, जो मसीह के राज्य में नई वाचा के श्रेष्ठ लाभों की केवल रूप रेखा है। इस शब्द का इस्तेमाल ''प्रतिबिम्ब'' और ''परछाई'' दोनों

के रूप में किया जाता है।[3] पुराने बलिदानों को परछाइयों का काम करते दिखाया गया है, जो उन बातों का संकेत है जो मसीह में आने वाले का *आदर्श स्वरूप* (प्रतीक) थे। (ये चीज़ें *अब* पवित्र लोगों के पास *आ गई हैं;* 9:11 पर चर्चा देखें।) "प्रतिबिम्ब ... बिना असली रूप के नहीं होता।"[4] कोई पेड़ की छाया और प्रतिबम्ब से सेब नहीं उतारता बल्कि सेब के असली पेड़ से ही उतारता है। व्यवस्था की ओर वापस जाना "क्रूस को पुल के प्रतिबिम्ब या परछाई पर एक पेड़ से मिलाने की कोशिश है।"[5] "प्रतिबिम्ब" वह, यानी उद्धार और इसका आश्वासन, नहीं दे सकता था, जिसकी हमें सबसे अधिक इच्छा और आवश्यकता है।

फिर लेखक ने कहा कि व्यवस्था उनका असली स्वरूप नहीं था। इस आयत में "स्वरूप" (*eikōn*) जिसका अर्थ "आकृति" है, "प्रतिबिम्ब" से कहीं अलग और ऊंचे शब्द की बात है। "स्वरूप" वास्तविकता के बराबर वही कलाकृति है। पौलुस ने कुलुस्सियों 1:15 में मसीह को परमेश्वर का "प्रतिरूप" (*eikōn*) सही ही बताया। फिलिप्स के संस्करण में इस आयत का अनुवाद इस प्रकार किया गया है, "अब मसीह अदृश्य परमेश्वर की दृश्य अभिव्यक्ति है। ..." इब्रानियों में *eikōn* शब्द केवल यहीं मिलता है। व्यवस्था में वह खूबी नहीं थी क्योंकि यह केवल "प्रतिबिम्ब" थी। प्रतिबिम्ब या परछाई बार-बार दिखाई दे सकता है परन्तु यह कभी भी वास्तविकता नहीं बन सकता। यह विचार किसी कलाकार के तस्वीर बनाना आरम्भ करने से पहले आउटलाइन बनाने या आरम्भिक स्कैच बनाने मेल खाता है।

लेवियों के समाराहों अर्थात "प्रतिबिम्ब" ने मसीह के महायाजकाई के काम के आरम्भिक स्कैच का काम किया, जो पूरी हुई तस्वीर है। व्यवस्था के सम्बन्ध में कुलुस्सियों 2:17 में पौलुस द्वारा ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल किया गया, जहां उसने इसे "आने वाली बातों की *छाया*" कहा।

मसीह परमेश्वर का *eikōn* या "असली स्वरूप" है, जो 2 कुरिन्थियों 4:4 से भी स्पष्ट है। वह पिता के तत्व की छाप है, जिसे हम देख नहीं सकते। ये आयतें हमें दिखाती हैं कि मसीह सिद्ध है जो हमें पुरानी वाचा के विपरीत सिद्ध व्यवस्था देता है। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की सारी "परिपूर्णता" यीशु में देहधारी होकर वास करती (कुलुस्सियों 1:19; 2:9)। इस बात पर इब्रानियों की पुस्तक के विचार पौलुस के विचारों जैसे ही हैं। इब्रानियों की पुस्तक और पौलुस के लेखों में उस स्वरूप में ढलने का आग्रह किया गया है (रोमियों 8:29)। 2 कुरिन्थियों 3:18 बताता है कि हम मसीह के उसी "रूप" (*eikōn*) में ढल सकते हैं। 1 कुरिन्थियों 15:49 में हमें बताया गया है कि "जैसे हम ने उसका *रूप* [*eikōn*] धारण किया जो मिट्टी का था, वैसे ही उस स्वर्गीय का *रूप* धारण करेंगे।"

हम सिद्ध (*teleioō*) बन सकते हैं यानी हम सिद्धता को पा सकते हैं या "सम्पूर्णता की स्थिति तक" लाए जा सकते हैं।[6] इब्रानियों 9:9 हमें बताता है कि "बलिदान ... आराधना करने वालों के विवेक को सिद्ध नहीं कर सकते।" NIV में कहा गया है कि बलिदान "विवेक को *शुद्ध* करने के योग्य नहीं हो सकते।" इस्राएल के बलिदान इसलिए किए जाते थे क्योंकि "पाप के वास्तविकता और दोष को [जो] 'आराधना में निकट आने' *विवेक* में आज भी अनुभव किया जाता है, *असल*" मिटना नहीं था।[7] आराधना में पास या "नज़दीक" आ [सकने] वाले केवल वही हैं जिन्होंने पापों की क्षमा प्राप्त कर ली है। पुरानी वाचा के द्वारा धार्मिकता पाने की इच्छा करने वाला कोई व्यक्ति इसे पा नहीं सकता है। इसलिए व्यवस्था के अधीन कोई भी

वास्तव में आराधना में परमेश्वर के पास या निकट नहीं आ सकता था। इब्रानियों 7:19 स्पष्ट बताता है कि मूसा की व्यवस्था वास्तव में किसी को परमेश्वर के निकट नहीं ला सकती थी। (''इसलिए कि व्यवस्था ने किसी बात की शुद्धि नहीं की'')। केवल मसीह में नई वाचा के अधीन ही विश्वासी की ''सिद्धता'' उसके लिए परमेश्वर के निकट आना सम्भव बना सकती है। इस सिद्धता में पवित्रता के ''सिद्ध करने वाले'' यीशु के जैसे होने के लिए बढ़ते रहना शामिल है (2 कुरिन्थियों 6:17—7:1)।

आयत 1 में ''अच्छी वस्तुओं'' किसे कहा गया है? यह अवश्य ही उत्तम आशा, उत्तम बलिदान, अनन्त छुटकारा, और हमारे उत्तम महायाजक द्वारा दिलाया गया उद्धार होगा, जो कि सब कुछ नई और उत्तम वाचा के द्वारा मिलता है। इसमें पाप के तथ्य और दोष से मन को वास्तव में शुद्ध किया जाना, अनादि परमेश्वर तक पहुंच, अन्त में स्वर्ग को पाना (या उसमें वास करना) भी शामिल है। सरल शब्दों में कहें, ''*आने वाली अच्छी वस्तुएं* अपनी आत्मिक महायाजकाई के साथ स्पष्टतया सुसमाचार ही है।''[8]

आयत 2. बलिदान करते रहने की बात इसलिए थी क्योंकि उनका विवेक उन्हें पापी ठहराता था (शायद यहूदी मसीही लोगों को भी)। इस आयत का स्वाभाविक निष्कर्ष यह है कि मन्दिर अभी खड़ा था और बलिदान अभी चढ़ाए जाते थे। पुरानी वाचा के अधीन परमेश्वर ने निरन्तर बलिदान चढ़ाए जाने की बात कही थी ताकि लोगों को अस्थाई रूप में क्षमा किया जाए। मन में पाप का होना परमेश्वर के साथ वास्तविक संगति में रुकावट बनता है। नई वाचा में शुद्धिकरण से वह संकेत मिलता है कि जो व्यक्ति को पिछले *सारे* पापों से शुद्ध करता है। असली क्षमा मसीह की मृत्यु के द्वारा उपलब्ध करवाई गई शुद्ध करने की आरम्भिक प्रक्रिया को बार-बार दोहराने की मांग नहीं करती। पुरानी वाचा के अधीन चाहे जितना भी बलिदान हो वह प्रतिबिम्ब को वास्तविकता में नहीं बदल सकता था। लेवीय व्यवस्था में शुद्ध किए जाने का यह उच्च विचार अज्ञात था।

शुद्ध (*katharizō*) शब्द सम्पूर्ण काल में है जो वर्तमान के साथ निरन्तर परिणाम वाले कालांतर में पूरे हुए किसी कार्य का संकेत देता है। हमें पिछले पापों की जानकारी या चेतना होने की आवयश्कता नहीं है क्योंकि अब ये हमारे जीवनों में हैं ही नहीं! यदि किसी मरीज को कोई दवाई बार-बार दी जाती है तो इसका मतलब है कि दवाई ने उसे चंगा नहीं किया है। बीमारी को रोका जा सकता है ताकि यह मरीज को और नुकसान न पहुंचाए, परन्तु यह पूरा इलाज नहीं है। एक बार क्षमा हो जाने पर व्यक्ति अपने पापों की चूक को समझ सकता है, जैसे पौलुस को भी समझ थी, पर यह जानते हुए कि मसीह के द्वारा उसे पूर्ण क्षमा मिल गई है, वह दण्ड के भय से डरता नहीं है। इसके विपरीत व्यवस्था पाप के सम्बन्ध में सेवा करने वाले को लगातार परेशान करते रहने के लिए बनाई गई थी। ''सेवा करने वाले'' के लिए शब्द (*latreuō*) से लिया गया है, जो ''ईश्वरीय आराधना'' (*latreias*, ''याजकीय सेवा'') के लिए 9:6 में इस्तेमाल हुए शब्द का एक रूप है।[9] अब हर मसीही याजक है (1 पतरस 2:5, 9)।

वे स्मरण कराते थे ( 10:3, 4 )

[3]परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। [4]क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।

आयत 3. आगे लेखक ने कहा कि उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। यहूदी मसीही लोगों को पुराने नियम के बलिदानों के प्रबन्ध की व्यर्थता की समझ होनी आवश्यक थी।

पापों का वार्षिक स्मरण इसके बलिदानों के साथ प्रायश्चित के दिन (योम किप्पुर) को आता था। उस दिन किया जाने वाला हर बलिदान इस्राएल के पाप के बने रहने वाले दोष की स्वीकृति था। प्रायश्चित का दिन ''पाप के विषय पर अपने पीटते रहने के साथ साल दर साल ओखली में कूटते हुए मानवीय आत्मा पर हथौड़े की तरह'' था।[10] उस दिन किए जाने वाले बलिदान सामान्य अर्थ में केवल पाप के लिए नहीं होते थे, बल्कि उन सभी पापों के लिए भी होते थे जिनके लिए पिछले वर्ष बलिदान किए गए थे। अन्य पाप बलियां जैसे अनजाने में किए गए पापों के लिए (गिनती 15:27, 28)। प्रतिदिन, साप्ताहिक और मासिक रूप में की जाती थीं। वास्तव में प्रायश्चित के दिन किए जाने वाले बलिदान में अन्य सभी बलिदान होते थे और वे पुराने नियम के बलिदानों के पूर्ण रूप में अपर्याप्त होने को दिखाते थे। ''चाहे कितनी भी बार दोहराया जाए प्रतिबिम्ब यानी परछाई को वास्तविकता में नहीं बदला जा सकता।''[11] बार-बार चढ़ाया जाना यहूदियों को उनकी कमियों और पुरानी वाचा की कमज़ोरियों को याद दिलाने का काम करता था। बेशक आम यहूदी यही बहस करता कि योम किप्पुर का मनाया जाना ''पापों के मिटाए जाने'' का दिन था, न कि ''स्मरण'' करने का दिन। उनके बीच गम्भीर विचारकों को निश्चय ही इसका उद्देश्य समझ आने लगा था: ''पाप की गम्भीरता, परमेश्वर की धार्मिकता की वास्तविकता और प्रायश्चित की आवश्यकता'' को दिखाना है।[12] परन्तु केवल एक नई वाचा (जिसकी प्रतिज्ञा यिर्मयाह 31:31-34 में दी गई थी) से परमेश्वर पापों को भूल नहीं सकता था। मसीह में अभी भी हमें पाप का स्मरण आवश्यक है, परन्तु प्रभु भोज के आनन्द से मनाने में हम प्रभु की मृत्यु के द्वारा अपनी क्षमा को भी याद कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 11:24-26)। उस स्मरण के बिना हमारा विश्वास मज़बूत नहीं हो सकता।

परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करना पाप पर बुरी तरह से निर्भर रहने से जो आज भी यहूदी व्यक्ति को सताता है जो व्यवस्था का वफ़ादार होने का प्रयास करता है, कहीं अलग चीज़ है। नई वाचा वह देने की पेशकश करती है जिसे दाऊद ने चाहा था जब उसने प्रार्थना की, ''हे परमेश्वर मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर।'' उसने इस बात को समझ लिया था कि वह बलिदान देकर इसे नहीं पा सकता, क्योंकि उसने आगे कहा, ''क्योंकि तू मेल बलि से प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता; होम बलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता'' (भजन संहिता 51:10, 16)। वह इस बात से परिचित था कि बिना शुद्ध मन के उसके बलिदान किसी काम के नहीं थे। परमेश्वर पशुओं के अस्थाई बलिदानों से संतुष्ट नहीं था। उसे आरम्भ से मालूम था कि एक उत्तम बलिदान आवश्यक होगा (1 पतरस 1:18, 19)। ''70 ईस्वी में मन्दिर के विनाश के बाद

की नई परिस्थितियों के लिए फलस्तीनी आराधनालय को आसानी से स्वीकार करने" और तुरन्त स्वीकृति से यहूदी अगुओं को भी यह स्पष्ट हो जाना आवश्यक था कि परिवर्तन हो सकता है।[13] पशुओं के बलिदान पाप को मिटा नहीं सकते (आयत 4)। वे मसीह की ओर संकेत करते हुए केवल पूर्व छाया या प्रतिबिम्ब थे। इब्रानियों की पत्री के आरम्भिक पाठकों के लिए मसीहा के विश्वासी बनने के लिए इस परिवर्तन को स्वीकार करना आवश्यक था।

आयत 4. आज मसीह को ठुकराकर यहूदी लोग यह तय करने की कोशिश में कि बाइबल के अनुसार पाप के साथ कैसे निपटा जा सकता है, अपने लिए यह समस्या उत्पन्न करते हैं। निश्चय ही बहुत से लोगों को यह समझ आ गई है कि पशुओं का लोहू पापों को दूर (*aphaireō*) नहीं कर सकता। इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय यह सच्चाई एक प्रसिद्ध कहावत बन गई होगी,[14] जो दाऊद की घोषणा या अन्य नबियों की बातों पर आधारित हो सकती है। उदाहरण के लिए मीका 6:7 में नबी ने माना कि परमेश्वर ने बलिदान से संतुष्ट नहीं होना था चाहे कोई अपने बच्चे का बलिदान ही क्यों न दे दे! बेशक काफ़िरों को नर बलि के लिए दोषी ठहराया जाता था। परमेश्वर ने इसहाक के साथ अब्राहम के परखे जाने के मामले के अपवाद के बावजूद, कभी भी ऐसे कार्य की मांग नहीं की (उत्पत्ति 22:1–14)। काफ़िर संसार में, जिसमें शायद पाप की थोड़ी बहुत समझ थी, किसी देवता के न्याय और दया दिखाए बिना क्षमा नहीं पाई जा सकती थी। परन्तु प्राचीन मिथ्या के अधिकतर देवी देवताओं ने दोनों में से कोई भी नहीं किया। किसी काफ़िर के लिए क्षमा वैसे ही हो सकती थी जैसे आज कइयों को लगती है: "परमेश्वर दयालु है और हमारे पापों को आज्ञा देकर क्षमा कर देता है।" पापियों के पास यह जानने का कोई ढंग नहीं था कि ऐसे माध्यम से क्षमा सम्भव थी। इसके लिए इस्राएल के पास कोई प्रकाशन नहीं था; परन्तु उनके पास क्षमा की झांकियां थीं (लैव्यव्यवस्था 4:20, 26, 31, 35)। एक दूरदर्शी अर्थ में, वे मसीह के बलिदान की ओर आगे को देख सकते थे, जिसके द्वारा विश्वासियों को क्षमा किया जाना था। यह इब्रानियों 9:13–15 और रोमियों 3:25 वाले विचार का भाग है।

पाप के दोष के लिए पक्की अदायगी के लिए परमेश्वर के करुणामय होने के साथ साथ धर्मी होने का एकमात्र ढंग था, और रोमियों 3:23–26 में पौलुस का तर्क ऐसा ही है। हम देख सकते हैं कि पापी द्वारा परमेश्वर को वास्तव में किसी भी पशु का बलिदान नहीं "दिया" जा सकता था, क्योंकि सब पशु तो प्रभु के ही हैं (भजन संहिता 50:10)।

वे असली बलिदान की परछाई थे ( 10:5–7 )

5इसी कारण वह जगत में आते समय कहता है,

> कि बलिदान और भेंट तू ने न चाही,
> पर मेरे लिए एक देह तैयार की।
> 6होम-बलियों और पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ।
> 7तब मैंने कहा, देख, मैं आ गया हूं,

( पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है )
ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं।

अपनी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए लेखक ने कहा कि पुराने नियम के बलिदान मसीह के बड़े बलिदान की परछाई थे। विभिन्न भजनों से पहले ही लेने के बाद (2; 45; 95; 110), लेखक ने अपने पाठकों का ध्यान भजन संहिता 40:6-8 की ओर दिलाया (LXX से)।[15] यह भजन अनादि पुत्र और पिता के बीच वार्तालाप के जैसा है, जिसमें बोलने वाला पुत्र है।[16] ''मसीहा के अन्य भजनों की तरह, दाऊद के शब्द मसीहा के शब्दों की परछाई हैं।''[17] ''वह जगत में आते समय'' अभिव्यक्ति का अर्थ मसीह के पूर्व-अस्तित्व का होना है।

आयतें 5-7. मूल में पर मेरे लिए एक देह तैयार की (आयत 5) के लिए इब्रानी वाक्यांश का अर्थ है ''तू ने मेरे लिए कान खोदे हैं'' (या ''तूने मेरे लिए कान खोले हैं''); परन्तु यहां इसका अनुवाद LXX से किया गया है। मूल अभिव्यक्ति बोलचाल की शैली हो सकती है जो देह के बनाने का सुझाव देती है, सो इस वाक्यांश का सही अनुवाद ''एक देह जो तूने मेरे लिए तैयार की'' है। ''तूने मेरे लिए कान खोदे हैं'' वाक्यांश यह अर्थ देता था कि सेवक जिसने अपने कान छेदे जाने के लिए अपने आप को दिया वह उस समय के बाद से अपने स्वामी का पक्का सेवक, आज्ञाकार और अधीन होगा (देखें निर्गमन 21:6)। LXX का अनुवाद यह मानता है कि कान तैयार करते हुए परमेश्वर ने पूरी देह को तैयार किया। ''परमेश्वर द्वारा बोलने वाले के लिए 'तैयार की गई' देह परमेश्वर को उसकी आज्ञाकार सेवा में दिए जाने के लिए, 'जीवित बलिदान' के रूप में लौटा दी जाती है।''[18]

लेखक ने बिना नाम लिए इसे LXX से उद्धृत किया। परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक के LXX के अनुवाद से निपटने के ढंग का सम्भावित विवरण यह है: ''जब सप्तत्ति अनुवाद मूल शब्द के सही अर्थ को बताता है, तो वह आम तौर पर इसे सही करने के रूप में अनुवाद को या तो सुधारता है या इब्रानी का एक नया अनुवाद हमें दे देता है।''[19] क्या हम यह कल्पना करने के लिए कि परमेश्वर ने LXX को इतनी आशीष दी कि वह इसे नया रूप दे सके, इतनी दूर चले जाएं कि यह वचन का सही अर्थ दे सके? हो सकता है, परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक ने जहां आवश्यकता पड़ी वहां मामूली सा सुधार किया, जैसा आयत 5 में है।[20] कई बार LXX नये नियम के लेखकों द्वारा दिया गया प्रतीत होता है, विशेषकर इब्रानियों की पत्री में अनुवादकों ने बिना मूल अनुवाद लिए अर्थ को व्यक्त किया है। ऐसी वाक्य रचना आवश्यक है क्योंकि कई मूल वाक्यांशों में किसी दूसरी भाषा में बदले जाने पर कोई अर्थ नहीं निकलता है। परमेश्वर ने हम सब को एक देह दी है, इस कारण वह इसे ''जीवित बलिदान'' के रूप में वापस पाने का इच्छुक है। परन्तु लेखक ने अपने मूल वाक्य रचना को किसी वचन को समझाने के लिए प्रचारकों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले ढंग की तरह बना लिया होगा।

आयत 6 पुराने नियम की होम बलियों और पाप बलियों में परमेश्वर के प्रसन्न न होने को दिखाती है क्योंकि उन के द्वारा पाप से उद्धार नहीं होता है। तू ने न चाही (आयत 5) अभिव्यक्ति का अर्थ है कि परमेश्वर को ऐसे बलिदानों की इच्छा या इरादा नहीं था।[21] बल्कि उसी काम को पूरा करने के लिए उसे यीशु की मृत्यु में पूरी खुशी थी। यीशु के बलिदान के

कारण परमेश्वर छुड़ाए हुए मनुष्य को "फिर से आनन्द से देख" सकता है, जैसे पाप में गिराने से पहले अदन की वाटिका में वह मनुष्य को देखता था।[22]

पवित्र शास्त्र में (आयत 7) वाक्यांश मूल इब्रानी धर्मशास्त्र में भजन संहिता 40:7 में है, जो "किसी भी बात के चरम- जूते की नोक, मेज़ के निचले भाग का संकेत देता है।" यह किसी छड़ी के सिरे या मुट्ठी का भी अर्थ देता है जिसके ऊपर पत्री को लपेटा जाता था। यहां मुट्ठी का अर्थ वैसा रोल है और आयत में उसका अनुवाद वैसे ही किया गया है।[23] "पुस्तक की पत्री" मूल विचार है, क्योंकि इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय अधिकतर प्राचीन पुस्तकें पत्रियों में ही बनाई जाती थी। यहां पर "पवित्र शास्त्र" परमेश्वर की व्यवस्था को कहा गया है। यीशु ने जो कुछ भी किया, व्यवस्था की "पुस्तक की पत्री" में लिखी गई बातों को पूरा करने के लिए था, जो विशेषकर मरने के लिए जाकर उसने पूरा किया (मरकुस 14:49)। आयत 8 में "व्यवस्था" का हवाला आयत 7 के "पवित्र शास्त्र" के अर्थ को स्पष्ट कर देता है। "पवित्र शास्त्र में लिखा हुआ" को "[मार्टिन लूथर का यह अर्थ] 'लिखा हुआ है' सही बताया गया था। जो कुछ लिखा हुआ है वह खराब न हो सकने वाला पहलू है।"[24]

यूहन्ना 10:34 में भजन संहिता 82:6 को "व्यवस्था" के रूप में बताकर यीशु ने भजनों ही की बात की थी। यह इस बात का सुझाव देता है कि पूरे पुराने नियम को कई बार "व्यवस्था" कहा जा सकता था। यदि इब्रानियों 10:7 में वर्णित "पवित्र शास्त्र" केवल पंचग्रंथ ही है तो पांच अंकों वाली पुस्तक में भी मसीह के हवाले हैं (देखें उत्पत्ति 3:15; 49:10; व्यवस्थाविवरण 18:15-18)। अपने पिता की इच्छा चाहे पुत्र के बलिदान की थी पर यह पुत्र की स्वैच्छिक इच्छा भी थी।

दाऊद ने लिखा, "मैं आ गया हूं, ... ताकि हे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करूं," परन्तु इस बात को कहते हुए, आत्मा में, वास्तव में मसीह ही बोल रहा था। भविष्यवाणी संसार में उसके आने से पूरी हो गई और उसने पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया। केवल आंशिक रूप में ही हम कह सकते हैं कि दाऊद ने परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया; परन्तु यीशु के लिए इसे ईमानदारी से और पूरी तरह से कहा जा सकता है (देखें यूहन्ना 6:38; 17:4)। याद करें कि "मसीह का आत्मा" पुराने नियम के नबियों में था; उन्हें कई बार इस बात की पूरी समझ नहीं होती थी कि वे क्या कह रहे या लिख रहे हैं (देखें 1 पतरस 1:10, 11)। इच्छा-शक्ति वाला ही जो अपने लिए चयन कर सकता हो, उपयुक्त बलिदान दे सकता था। जानवर जिसकी न इच्छा है न पसन्द, परमेश्वर के न्याय की शर्त को अन्त में पूरा नहीं कर सकता था। यीशु ने अपना प्राण दे दिया ताकि वह "इसे फिर से ले" सके (देखें यूहन्ना 10:11, 15, 17, 18)।

वे पहली वाचा थे ( 10:8-10 )

[8]ऊपर तो वह कहता है, कि न तू ने बलिदान और भेंट और होम-बलियों और पाप-बलियों को चाहा, और न उनसे प्रसन्न हुआ; यद्यपि ये बलिदान तो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं। [9]फिर यह भी कहता है, कि देख, मैं आ गया हूं, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं; निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे। [10]उसी इच्छा से हम यीशु

मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।

आयतें 8-10. लेखक ने कहा कि यह बलिदान पुरानी (पहली) वाचा का भाग थे। भजन संहिता 40:6-8 के उद्धरण की व्याख्या करने के लिए उसने ज़ोर देने के लिए फिर से इसके भाग को उद्धृत किया। एक बार फिर यह 13:22 की तरह ही प्रवचन का स्वभाव है। इस उद्धरण में बोलने वाला मसीह है। नई वाचा को लाने से बहुत पहले उसे मालूम था कि बलिदानों का पुराना प्रबन्ध निष्फल था। वह पृथ्वी पर इसलिए आया ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह से मान सके। यह भविष्यवाणी दाऊद के द्वारा आई थी, परन्तु यह दाऊद की ओर से नहीं थी। परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए मसीह ने वह होना था जो पहले नियम या व्यवस्था को उठा देता है (आयत 9)। *Anaireō* ("उठा देता है") शब्द का अनुवाद "मिटा देता है" (NRSV) हो सकता है और आम तौर पर इसका अर्थ "हत्या" करना होता है।[25] "पुराने को 'हटा दिया' गया है, एक मज़बूत शब्द है जो पूरी तरह से निकाले जाने का संकेत देता है।"[26]

नई वाचा के लिए जगह बनाने के लिए पुरानी वाचा को हटाया जाना था। लेखक ने एक अर्थ में यह कहते हुए इस बात पर ज़ोर दिया, "जैसा यहां उद्धृत किया गया है, भजन संहिता 40:6-8 में यीशु आकर अपने पिता की इच्छा पूरी कर रहा था। उसने व्यवस्था की गुलामी के जुए को हम से उतारने और दूसरी वाचा और व्यवस्था देने के लिए अपनी देह पेशकश दी।" "पहले" को उठाकर मसीह ने पुरानी वाचा को मिटा दिया (देखें रोमियों 7:1-7) ताकि दूसरे को नियुक्त करे (आयत 9)।

इब्रानियों के लेखक को पता था कि व्यवस्था बलिदान चढ़ाए जाने को अधिकृत करती है (आयत 8; देखें लैव्यव्यवस्था 1—7)। परन्तु उसे यह भी पता था कि भेंट देने के समय आराधक के सच्चे मन से पश्चात्तापी न होने पर नबियों ने उन्हें अमान्य माना था। (उदाहरण के लिए देखें, होशे 6:6; यशायाह 1:11-14; मीका 6:6-8.) इसलिए हम पढ़ते हैं, "न तू ने ... चाहा, और न उनसे प्रसन्न हुआ" (आयत 8)। ऐसा ही था जिस कारण परमेश्वर ने उत्तम बलिदान देने की योजना अनन्तकाल से बनाई थी (आयतें 9, 10)। मसीह के बलिदान ने एक ही बार (*ephapax*) में समस्या का हल कर दिया।[27]

मसीह के बलिदान के द्वारा हमें पवित्र किया जाता है। यह समय में एक जगह (भूतकाल कृदंत का इस्तेमाल) "उद्धार पाए हुए" होने वाली बात ही है।[28] मसीह की प्राप्ति से मनुष्यों के साथ परमेश्वर की नई वसीयत या वाचा भी प्रभावी हो गई। यदि मसीह ने पिता की इच्छा को पूरा न किया होता तो हमें उद्धार की कोई आशा नहीं होनी थी। यहूदी सोच के अनुसार "पवित्र किए" जाने का अर्थ था कि व्यक्ति को शुद्ध किया गया है ताकि वह आराधना में परमेश्वर के निकट जा सके। हमारे लिए इसका यही बल्कि इससे भी बढ़कर अर्थ है।

"पवित्र किया जाना" मसीह में हमारे आरम्भिक मनपरिवर्तन के समय की एक बार होने वाली घटना और मसीही व्यवहार में बढ़ने की चलती रहने वाली प्रक्रिया दोनों हैं। 2 कुरिन्थियों 7:1 में हम इस विचार को देखते हैं जो हमें "अपने आपको शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करने और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को शुद्ध करने" की शिक्षा देता है।[29]

यीशु के लिए पिता की इच्छा को लाने के लिए दो बातें आवश्यक थीं। पहली, उसके लिए

एक देह तैयार की जानी आवश्यक थी (आयत 5), जो उसके जन्म के समय हुआ। दूसरा, उसे पुराने प्रबन्ध को हटाना आवश्यक था (आयत 9ख)। हमारे प्रभु को पृथ्वी पर अपने आने से बहुत पहले अपने आने का उद्देश्य मालूम था। उसका बलिदान इतना सिद्ध था कि उसे दोबारा देने की कभी आवश्यकता ही नहीं होनी थी![30] परमेश्वर को इस एक आज्ञापालन और अपना बलिदान देने की पेशकश की बात अच्छी लगी और इस कारण वह पाप क्षमा करता है। स्वर्ग में यीशु को हर बात का पता था जो मनुष्यजाति के उद्धार के लिए आवश्यक थी। उसने मानवीय जीवों के उद्धार के लिए अपने प्राण का लहू स्वेच्छा से देने की पेशकश की (यूहन्ना 3:16)।

मसीह के द्वारा पवित्र किए गए ( 10:11-18 )

जानवरों के बलिदानों के अपर्याप्त होने पर ज़ोर देने के बाद लेखक ने मसीह के बलिदान के पर्याप्त होने को दिखाया। उसने अपने बलिदान की अन्तिम बात में (आयतें 11-14) और पवित्र आत्मा की गवाही में (आयतें 15-18) मसीह के वर्तमान में ऊंचा किए जाने को दिखाया।[31]

मसीह ने वास्तव में हमारे लिए क्या किया? उसकी मृत्यु ने न्याय की मांगों को पूरा करके हमें पवित्र कैसे बनाया? इब्रानियों 10:11-18 इन प्रश्नों का उत्तर देता है।

मसीह, हमारा बैठा हुआ प्रभु ( 10:11, 12 )

[11]और हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार-बार चढ़ाता है। [12]पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दहिने जा बैठा।

आयतें 11, 12. सबसे पहले हम यीशु को अपने बैठे हुए उद्धारकर्त्ता के रूप में देखते हैं। आयत 11 कहती है, हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है। याजकों को तम्बू या मन्दिर में कभी सहज महसूस नहीं हुआ था, क्योंकि उन्हें खड़े ही रहना पड़ता था। खड़े होना इस बात को दिखाता है कि पाप क्षमा किए जाने का काम पुरानी व्यवस्था के अधीन कभी पूरा नहीं हुआ था। इसके विपरीत यीशु बलिदान के अपने काम को पूरा करके महिमा में बैठा हुआ है "बैठा हुआ याजक पूर्ण हो चुके काम और स्वीकार किए गए बलिदान की गारंटी है।"[32] मसीह के परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे होने का विचार नये नियम का प्रमुख विचार है और यहूदियों को परिवर्तित करने के लिए सहायक था। आम तौर पर इसे "प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा" वाक्यांश के साथ दिया जाता है (प्रेरितों 2:34-36; देखें भजन संहिता 110:1)।

पुरानी याजकाई द्वारा एक ही प्रकार के बलिदान चढ़ाए जाते रहना केवल "शून्यों की डोरी" थी।[33] "एक ही प्रकार के बलिदानों" पर ज़ोर इस बात पर बल देता है कि हर रोज़ बलिदान भेंट किए जाने की रस्म पूरा किया जाना आवश्यक था। व्यवस्था के अधीन याजकाई का काम इतना निरन्तर था कि कई याजकों को काम के लिए बारी लगानी पड़ती थी। पहली सदी के रहस्यमय काफ़िर धर्मों में अपने देवताओं के सामने "बलिदान" निरन्तर किए जाते थे,

परन्तु केवल मसीहियत में एक ही बार, हमारे प्रभु द्वारा पूरा किया गया काम मिलता है, जो हमें **सर्वदा के लिए** पाप से बचाता है। इतिहास में किसी और धर्म में एक ही बार होने वाली ऐसी कोई घटना नहीं है, जो उद्धार के लिए सारे संसार की इच्छाओं को पूरा कर दे। मसीह के अलावा और कोई याजक बैठ नहीं सकता था, जिसने अपना काम पूरी तरह से पूरा कर लिया हो (आयत 12)। हमारे छुटकारे को पाने का यीशु का काम पूरा हो गया है।

मसीह, बाट जोह रहा हमारा प्रभु ( 10:13, 14 )

[13]और उसी समय से इसकी बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें। [14]क्योंकि उसके एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है।

आयत 13. दूसरा, हम यीशु को हमारी बाट जोहने वाले प्रभु के रूप में देखते हैं। वह उसी समय से इसकी बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें। यहां हमें भजन संहिता 110 (आयत 1) से एक और उद्धरण मिलता है। अध्याय 5 और 7 में इस भजन का इस्तेमाल बार-बार किया गया था। इस वचन पर पौलुस द्वारा अतिरिक्त टिप्पणियां 1 कुरिन्थियों 15 में की गई हैं। अपना एक ही बड़ा बलिदान देकर मसीह अब समय के अन्त तक बाट जोहता है, जब वह राज्य को पिता को वापस लौटा देगा। यह तब होगा जब अन्तिम शत्रु को जो कि मृत्यु है, पुनरुत्थान के समय नष्ट कर दिया जाएगा। यीशु के वापस आने पर जब पुनरुत्थान होगा, तो वह अपने शासन को पिता को सौंप देगा (1 कुरिन्थियों 15:23-28)। यह उसकी वापसी के समय उसके एक राज्य का आरम्भ करने के विचार के सीधा विरोध में है।

पृथ्वी एक अन्तिम दिन की ओर बढ़ रही है जब मसीह हमारे हर शत्रु पर विजय पा लेगा। मृत्यु ही वह अन्तिम शत्रु है जिसे खत्म किया जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:26)। मसीह के आने पर अन्त हो जाएगा, क्योंकि उसका आना "अन्त के दिन" होगा (यूहन्ना 6:39, 44)। उस दिन धर्मी और अधर्मी सब मुर्दों को जिलाया जाएगा (यूहन्ना 5:28, 29)। इसका अर्थ यह है कि यह अन्तिम न्याय का समय होगा जो मुर्दों के जी उठने के बाद होने वाला है।

आयत 14. एक ही चढ़ावे का विचार काफ़ी बार दोहराया जा चुका है। मसीह के कार्य के द्वारा विश्वासियों को पवित्र किया जाता है। *Hagiazō* से अनुवादित शब्द "पवित्र किए जाते" का अर्थ "पवित्र बनाना" या "पवित्र उद्देश्य के लिए अलग करना"[34] है। यह प्रक्रिया उन सब पर लागू हुई है जिन्होंने मसीह को पहन लिया है (गलातियों 3:26, 27)। वे नये जीवन (कुलुस्सियों 2:12; 3:1) अर्थात पवित्रता के जीवन (1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8) में चलने के लिए जी उठे हैं। इस प्रकार से जीना हमारी ज़िम्मेदारी है क्योंकि हमें मसीह के द्वारा पवित्र किया गया है। यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को सेवा के लिए अलग करने के बहुत देर बाद, उसने उनके पवित्र किए जाते रहने के लिए प्रार्थना की (यूहन्ना 17:17)। उस में हमें यह पवित्र किया जाना मिलता है जिससे "विवेक की शान्ति जो व्यवस्था कभी नहीं दे सकती थी" पाने में सहायता मिलती है।[35] एक दिन हम छुड़ाए हुए लाखों लोगों के साथ होंगे।

''पवित्र किए'' जाने का अर्थ है कि हमें सिद्ध कर दिया गया है (*teleioō*; देखें 2:10; 7:11, 19, 28; 10:1)। पवित्र किया जाना प्रभु की कलीसिया के लोगों के लिए है और इसे वचन के द्वारा प्राप्त किया जाता है (यूहन्ना 17:17)। यह ''जल के स्नान'' से भी होता है, जो कि स्पष्ट रूप में बपतिस्मे की बात है (इफिसियों 5:25, 26; देखें इब्रानियों 10:22)। हमारे पवित्र किए जाने के लिए दोनों आवश्यक हैं।

मसीह, हमारा पूर्ण प्रायश्चित ( 10:15-18 )

15और पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है; क्योंकि उसने पहिले कहा था,

16''कि प्रभु कहता है; कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उनसे बान्धूंगा
वह यह है, कि मैं अपने नियमों को उनके हृदय पर लिखूंगा
और मैं उनके विवेक में डालूंगा।''

( फिर वह यह कहता है, कि )

17''मैं उनके पापों को, और उनके अधर्म के कामों को
फिर कभी स्मरण न करूंगा।''

18और जब इनकी क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।

तीसरा, सबसे बड़ा समाचार यह है कि हम मसीह को अपने पूर्ण प्रायश्चित के रूप में देखते हैं (आयतें 15-18)। जैसे एक प्रचारक कर सकता है, लेखक अपने पाठकों को इसे स्मरण कराने और इसके मुख्य संदेश पर ज़ोर देने के लिए उद्धृत करते हुए, मुख्य वचन की ओर लौट आया। उद्धृत किया गया वचन यिर्मयाह 31:31-34 में से है और इसे पवित्र आत्मा की ओर से दिया गया माना जाता है। पुराने नियम में केवल यही वचन है जो स्पष्ट रूप में ''नई वाचा'' की ओर ध्यान दिलाता है। लेखक ने यह ज़ोर देते हुए कि 1 कुरिन्थियों 10:6, 11 में पौलुस द्वारा इसी विचार को कहा गया था, इसे विशेष रूप में मसीही युग के लोगों के लिए होने का सुझाव भी दिया। हमें पुराने नियम को इस प्रकार से पढ़ना आवश्यक है जैसे यह हमारे लिए लिखा गया हो, बेशक पुराने नियम की व्यवस्था हम पर लागू नहीं होती है। आज्ञा मानने की परमेश्वर की शर्त के बुनियादी नियम कभी नहीं बदलते। याद करें कि व्यवस्था अन्यजातियों को भी मसीह के पास लेकर आई। (देखें गलातियों 3:24; हम मान सकते हैं कि अधिकतर गलाती लोग अन्यजाति ही थे।)

आयतें 15, 16. पवित्र आत्मा ... हमें गवाही देता है (*martureō*)। 8:8 में लेखक ने परमेश्वर को बोलने वाला होने का संकेत दिया, परन्तु अर्थ में कोई वास्तविक अन्तर नहीं है। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र ''परमेश्वर के विश्वास से,'' पवित्र आत्मा के द्वारा ''परमेश्वर की प्रेरणा

से'' है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

यहां दिया गया हवाला वही नहीं है जो 8:8-12 में दिया गया है, परन्तु इसमें सच्चाई वही है। लेखक ने पुराने नियम के वचन को अपने शब्दों में लिखते और शिक्षाओं को और स्पष्ट तथा ज़ोरदार बनाने के लिए होमिलेटिकल ढंग का इस्तेमाल किया। ह्यूजस ने लिखा है:

> यह तथ्य कि यह उद्धरण यिर्मयाह 31:33से आगे के वचन के साथ पूरा पूरा मेल नहीं खाता। ... एक बार फिर से दिखाता है कि मुख्य महत्व शब्दों के अर्थ का है न कि एक-एक शब्द का अर्थ निकालना (असल में एक-एक शब्द का अर्थ निकालना जिसे वूडन लिटरलिज़म कहा गया है, अनुवाद बल्कि व्याख्या की सम्भावना को भी निकाल देता है। ...) इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा को स्वयं भी ... उस सच्चाई की समझ और प्रासंगिकता का ध्यान है, जो उसने दी है।[36]

इब्रानियों की पुस्तक में अलग ढंग से लिखना और व्याख्या किया जाना बार-बार आता है। उद्धरण में थोड़ा सा अन्तर किसी भी प्रकार से इस वचन या पवित्र शास्त्र के किसी भी अन्य वचन की आत्मा के द्वारा पूरी प्रेरणा का इनकार नहीं करता है।

पवित्र आत्मा की ओर से पुष्टि किया जाना परमेश्वर के वचन में और वचन के द्वारा किया गया। जिसे नबियों और प्रेरणा पाए हुए अन्य लोगों के द्वारा लिखा गया था अब वह पवित्र शास्त्र में मिलता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि जब प्रेरणा पाए हुए किसी व्यक्ति ने पुराने नियम को पढ़ा और उसके अर्थ की व्याख्या की, तो हमारे पास जिस प्रकार से मूल में उद्धृत किया गया था वैसे ही पूरे अधिकार से दी गई व्याख्या है। यह पक्की बात है कि (1) नबियों ने उस प्रेरणा और अधिकार से लिखा जो उन्हें परमेश्वर की ओर से मिला था और (2) हम वर्तमान अनुवाद में उसके वचन को पढ़ सकते हैं (2 पतरस 1:20, 21)।

यिर्मयाह ने ''नई वाचा'' के विषय में लिखा, जो आने वाली थी (यिर्मयाह 31:31-34), परन्तु उसे अपनी बात से अधिक अधिकार था क्योंकि वह पवित्र आत्मा से प्रेरणा पाया हुआ था। यह नई वाचा यीशु द्वारा दी गई वाचा से अलग क्या हो सकती थी?

आयत 17. पुरानी और नई वाचाओं में अन्तर की मुख्य बात नई वाचा के अधीन बलिदान की और किसी आवयश्कता के बिना पापों की पूरी और पूर्ण क्षमा है। परमेश्वर में फिर कभी स्मरण न करने की क्षमता है। यीशु की मृत्यु के कारण हमें क्षमा करके परमेश्वर अब पूरी तरह से धर्मी ठहरा है, इस कारण किसी भी प्रकार का बलिदान देते रहना पवित्र शास्त्र की बुनियाद के बिना है। मसीह की देह को किसी मास या किसी भी अन्य प्रकार की आराधना सेवा में नहीं दिया जा सकता क्योंकि यह तो ''सर्वदा के लिए'' एक ही बार दे दी गई थी (आयत 12) और सम्पूर्ण उद्धार दिलाती है (9:26-28; 10:14)।

आयत 18. परमेश्वर का पाप को ''कभी स्मरण न'' करना इन की क्षमा या ''पापों की क्षमा'' वाले विचार जैसा ही है (प्रेरितों 2:38)। अब यह मसीह में पा लिया गया है। हमें अन्तिम न्याय की राह देखने की आवश्यकता नहीं है; हमें सुसमाचार के अपने आज्ञापालन पर अपने पापों की क्षमा मिली गई है। इसे पा लेने के बाद पाप का बलिदान चढ़ाने की और आवश्यकता

नहीं है।

इस वचन के साथ पत्री का डॉक्ट्रिन वाला भाग खत्म होता है। पुस्तक का शेष भाग विश्वास के उदाहरणों पर ध्यान देने और हमारे विश्वास के कर्त्ता मसीह के पीछे चलने पर केन्द्रित है।

## परमेश्वर तक श्रेष्ठ पहुंच (10:19-39)

इन आयतों के साथ हम उस भाग को आरम्भ करते हैं जिसे ''आराधना के लिए तैयार हो जाएं'' नाम दिया जा सकता है।[37] एक टीकाकार ने 10:19—12:29 पर अपनी चर्चा को ''आराधना, विश्वास और दृढ़ रहने की बुलाहट'' नाम दिया है।[38] इब्रानियों की पुस्तक में डॉक्ट्रिन सम्बन्धी निर्देश अब लगभग पूरा हो चुका है, इसके बाद विश्वास की चाल के लिए व्यावहारिक परामर्श है। नया नियम कामों को शिक्षा के साथ ही जोड़ता है। डॉक्ट्रिन अकेली कभी नहीं हो सकती; हमारे अपने जीवनों के लिए मसीह की शिक्षा की मांगों को पूरा करने की इच्छा होनी आवश्यक है। यह प्रेरणात्मक (उपदेशात्मक) भाग मसीह के लहू के प्रभावी होने (9:11-28) और उसके बलिदान की सामर्थ पर आधारित है (10:1-18)।[39]

यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 19 से लेकर आयत 25 तक एक लम्बा वाक्य है। आयत 19 का आरम्भ एक मज़बूत शब्द ''इसलिए'' के साथ होता है जिसका आम तौर पर संकेत एक नये खण्ड के लिए होता है, जैसे 4:14; 9:1, 23 में है। यह ''एक बात से अपील में बदलाव'' है।[40] आयतें 19 और 21 तक तीन बार ''क्योंकि'' का विचार मिलता है। आयतें 19 और 21 में इसे स्पष्ट किया गया है जबकि आयत 20 में इसका संकेत है। विचार यह है कि ''एक नया और जीवित मार्ग'' हमें मिला है-और ''इसलिए'' यह सच है, इसलिए हमें इसका कुछ करना चाहिए।

भरोसे का कारण ( 10:19-25 )

[19]सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। [20]जो उसने परदे अर्थात अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है, [21]और इसलिए कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। [22]तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं। [23]और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है। [24]और प्रेम, और भले कामों में उकसाने के लिए एक दूसरे की चिन्ता किया करें। [25]और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।

आयत 19. पहला ''इसलिए'' है सो ... हमें ... हियाव हो गया है। यह शान्ति का भरोसा है क्योंकि हमें आश्वस्त किया गया है कि हमें यह ढंग मिला है, इस कारण हमें इस में प्रवेश

करना चाहिए और इस में रहना चाहिए।

इस पत्री के प्राप्तकर्त्ताओं को हे भाइयो कहा गया, जो अपने अनुयायियों के लिए मसीह द्वारा जुटाए गए बड़े लाभों में उनके सहभागी या संगति होने का संकेत है। भाइयों के रूप में वे परमेश्वर के साथ ''सहकर्मी'' या ''सह मज़दूर'' थे (1 कुरिन्थियों 3:9; देखें KJV)। इब्रानियों की पुस्तक में आराधना के जिस ढंग पर ज़ोर दिया गया है वह केवल ''भाइयों,'' ''स्वर्गीय बुलाहट में भागी'' लोगों के लिए ही खुला है (3:1)।[41] यह बहुत अच्छा शब्द है जिसके द्वारा लेखक ने अपने आपको अपने पाठकों से मिलाया।

''हियाव'' के साथ अब हम परमेश्वर के निकट आ सकते हैं, जैसा कि 4:16 में सुझाव दिया गया है। ऐसा हियाव उस ''उत्तम आशा'' के कारण है जो मसीह में हमें मिली है (7:19)। हमारा हियाव और भरोसा पूरी तरह से ऐसे ज्ञान से मिला है जो हमने इब्रानियों की पुस्तक के अपने अध्ययन के द्वारा पाया है। जिन्हें क्षमा मिल गई है उन्हें आराधना में परमेश्वर के निकट आने पर डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

हमारे हियाव में ये सच्चाइयां शामिल हैं:

मसीह के द्वारा परम पवित्र स्थान में जाने का मार्ग उपलब्ध है।
मसीह स्वयं अपना ही लहू लेकर गया है।
वह हमारे लिए याजक के रूप में विनती करने को सर्वदा जीवित है (7:25)।
प्रायश्चित के उसके लहू के द्वारा हमें उसके पीछे चलने की अनुमति मिलती है। हम ''परमेश्वर की ओर से ऐसा भवन'' पाने की राह देख रहे हैं ''जो हाथों से बना हुआ घर नहीं'' (2 कुरिन्थियों 5:1)।

इन आश्वासनों में अपने विश्वास के कारण हमें परमेश्वर के साथ पहले ही सहज महसूस करना चाहिए।[42]

आयतें 19 से 21 इब्रानियों की पुस्तक में पहले बताए गए कुछ विचारों को संक्षिप्त करती हैं। किसी चर्चा में एक से अधिक समीक्षा सुनने वालों के मुख्य बातें याद रखने में सहायक हो सकती हैं। यह वचन हमारे नये महायाजक की निर्भयता, नए ढंग और सहायता करने वाला होने पर ज़ोर देता है।

परमेश्वर की आराधना में अब हम पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते हैं जिसमें पहले महायाजक को छोड़ और कोई नहीं जा सकता था। इब्रानियों 9:3 इस स्थान का संकेत ''परम पवित्र स्थान'' के रूप रूप में देता है। अब हम आत्मिक आराधना में परमेश्वर तक पहुंचकर विश्वास और प्रार्थना के द्वारा आत्मिक रूप में स्वर्ग में चढ़ सकते हैं। ऐसा हम यीशु के लोहू के द्वारा कर सकते हैं।

आयत 20. यहां हमें ''इसलिए कि'' का संकेत मिलता है जो हमें रास्ते का भरोसा देता है। यीशु ने हमारे लिए नया और जीवता मार्ग (आयत 19) दिया है। ''मार्ग'' वही है (यूहन्ना 14:6)। ''नया'' (*prosphatos*) ताज़ा अंगूरों, ताज़ा जैतूनों, ताज़ा मछली, ताज़ा पानी या किसी बात के लिए जो अभी अभी हुई हो लागू किया जाता है।[43] मार्ग ''नया'' है क्योंकि मसीह

के आने और पिता तक जाने का "मार्ग" खोलने तक, इसका पता नहीं था। उसने अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे लिए स्वर्ग को खोल दिया। क्रूस पर उसके **शरीर** को फाड़ा गया, यानी उसकी मृत्यु में **पर्दे** को फाड़ा गया (देखें मत्ती 27:51)। यह नया मार्ग पुराने मार्ग से अलग है, जिसे अब पूरा करके बदल दिया गया है। यीशु के कारण "जीवते मार्ग" के रूप में, यह नया ही रहता है; कोई मृत बलिदान इसे खोल नहीं सकता था। यह यीशु के लहू की खूबी है न कि हमारी अपनी कोई खूबी जो इसमें प्रवेश दिलाती है (आयत 19)। यह "नया" और "जीवता" है क्योंकि मसीह हमारा प्रभु हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता रहता है (देखें 7:25)।

जिस प्रकार मन्दिर में प्रवेश केवल "पर्दे" में से होकर ही हो सकता था वैसे ही हमें अपने आत्मिक "पर्दे" अर्थात मसीह की देह के बीच में प्रवेश दिलाया गया है। इस रूपक में उसकी मृत्यु को फिर से दिखाया गया है, और लेखक ने इसकी आवश्यकता को समझाया। तम्बू में पर्दा मनुष्यों को परमेश्वर से दूर रखता था; परन्तु अब यीशु की देह ही, जिससे फाड़ा गया है, पिता तक जाने का मार्ग खोलती है। ह्यूजस ने कहा है:

> क्रूस पर उसकी मृत्यु के समय, जो हमारे प्रायश्चित का समय भी था, डरावना और रोकने वाला पर्दा ऊपर से लेकर नीचे तक फट गया [मरकुस 15:38], जो यह संकेत देता है कि परमेश्वर ने काम किया था और उसकी पवित्र उपस्थिति का मार्ग अन्त में खुल गया था।[44]

आयत 21. अगला "इसलिए" है इसलिए कि हमारा ऐसा महान याजक है। यह एक उपलब्ध करवाने वाले का भरोसा है। हमने आराधना के नई वाचा की विशेष आशिषों को देखा है; आगे लेखक ने समझाया कि हमारे महायाजक ने हमें कैसे आशीष दी है।

**परमेश्वर के घर का अधिकारी** हमारा नया और "महान याजक" मसीह है, जो अपनी कलीसिया का सिर है (आयत 1; इफिसियों 1:22, 23; 1 तीमुथियुस 3:15; देखें इब्रानियों 3:6; 8:1)। "परमेश्वर के घर" मसीही युग में परमेश्वर के लोगों को कहा गया है (देखें 3:6)। "महान" हारून की पूरी याजकाई के विपरीत संकेत दे सकता है, परन्तु निश्चय ही 70 ईस्वी में यरूशलेम के पतन से पहले के कुछ अन्तिम महायाजकों में महानता की कमी की ओर ध्यान दिलाता है।

आयत 22. हमें कहा गया है कि समीप जाएं। रुकावट का पर्दा गिर जाने से, हमें यह जानते हुए कि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जाएगा "समीप जाने" के योग्य होने के सम्बन्ध में पूरे विश्वास का आश्वासन दिया गया है।[45] अन्य शब्दों में हमारे लिए मन फिराव वाला जीवन स्वाभाविक बन जाना चाहिए। इन शब्दों में वास्तव में हमें "समीप आने" की आज्ञा है।[46] हमें हर प्रतिज्ञा पर विश्वास करते और हर आज्ञा को मानते हुए परमेश्वर के वचन को वैसे ही मानना आवश्यक है। जिस प्रकार से सीनै पहाड़ पर परमेश्वर के पास आने से पूर्व इस्राएलियों के लिए अपने आपको शुद्ध करना आवश्यक था (निर्गमन 19:10), वैसे ही हमें भी उसके निकट आने के लिए मन में शुद्ध होना आवश्यक है (1 पतरस 1:22, 23)।

हम दयालु आत्मा के दया दिखाने और शायद दीनता दिखाने को देखते हैं जिसमें लेखक कहता है तो आओ। "तो आओ" *हम* मिलकर आगे बढ़ें, की चुनौती देते उसने हुए अपने

आपको अपने पाठकों के साथ मिलाया।[47] आयतें 22 और 24 में यहां तीन में से पहली बार वर्तमान काल का इस्तेमाल हुआ है जो निरन्तर कार्य करने या प्रोत्साहन देने का संकेत है।

हम परमेश्वर के और "अनुग्रह के सिंहासन" (4:16) के वैसे ही जैसे पुराने नियम का याजक तम्बू और इसके परम पवित्र स्थान के निकट आता था, परन्तु उससे अधिक पूर्ण और वास्तविक ढंग से "समीप आते" हैं। हम आराधना में परमेश्वर के निकट आते हुए वास्तव में कार्य करते हुए याजक हैं।

लेखक ने दिखाया कि आगे बढ़ने के लिए हमें सच्चे मन से "पूरे विश्वास" की आवश्यकता है। बिना इसके हम आत्मिक समर्पण में परमेश्वर के निकट आना आरम्भ भी नहीं कर सकते। यह वाक्यांश पूरी ईमानदारी के साथ और बिना कपट के आने वाले व्यक्ति को दिखाता है (देखें यूहन्ना 4:24)। हमें हृदय पर यीशु के लहू का छिड़काव लेकर भी आना आवश्यक है, ताकि हमारे पाप की हर प्रकार की अशुद्धि को हटा दिया जाए। यदि हमारे मन हमें दोषी ठहराते हैं तो हमारे और परमेश्वर के बीच एक रुकावट है। परन्तु दोष की रुकावट को यीशु के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से दूर किया जा सकता है, क्योंकि "परमेश्वर हमारे मन से बढ़ा है, और सब कुछ जानता है" (1 यूहन्ना 3:20)। वह पाप के हर कारण को और हमारी निर्बलता के हर कारण को जानता है। इस पूर्ण ज्ञान के साथ वह पुत्र के निरन्तर विनती करते रहने के साथ, अपने पुत्र के महान और अद्‌भुत बलिदान के द्वारा अपना अनुग्रह दिखाने के आधार पर क्षमा करने के योग्य है (7:25)।

परमेश्वर के समीप आने के लिए "सच्चा मन" होने के अलावा अपनी देह को शुद्ध जल से धुलवाना भी आवश्यक है। बिना विश्वास के हम परमेश्वर के निकट नहीं जा सकते। हमारा विश्वास "पूरे विश्वास" के साथ "मसीह की याजकाई के बारे में और नई वाचा के पुरानी से श्रेष्ठ होने का पक्का और अडोल विश्वास" होना आवश्यक है।[48] इब्रानी मसीही लोगों की तरह हमें पारमेश्वर के निकट आने के लिए बपतिस्मे के द्वारा लहू में "धोया" गया है (देखें प्रकाशितवाक्य 1:5, 6; प्रेरितों 22:16)।

आयत 22 में "जल" की यह बात बपतिस्मे का हवाला ही होगा।[49] नये नियम में यह बहुत स्पष्ट है कि बपतिस्मा, या डुबकी पापों की क्षमा के लिए दी जाती थी (प्रेरितों 2:38; 22:16)। एक टीकाकार ने लिखा है, "किसी के परमेश्वर के निकट आने से पहले सार्वजनिक रूप में कुछ आरम्भिक संस्कार आवश्यक होना था।"[50] लहू और पानी के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। यूहन्ना ने भी जल और लहू पर काफ़ी ध्यान दिया (1 यूहन्ना 5:7, 8)।

प्रायश्चित के दिन काम करने वाले याजक के लिए "जल से स्नान" करना आवश्यक था (लैव्यव्यवस्था 16:4)। जल से नया शुद्ध किया जाना शरीर के मैल उतारने के लिए नहाना ही नहीं है; बल्कि यह हमारा उद्धार करने के लिए विवेक के शुद्ध किए जाने से जुड़ा है (1 पतरस 3:21)। बपतिस्मे को आम तौर पर स्नान से जोड़ा जाता है (प्रेरितों 22:16; इफिसियों 5:26; तीतुस 3:5)।[51] "छिड़काव" का बपतिस्मे के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था, परन्तु यह "मन फिराव और बपतिस्मे के संकेतों वाली मनपरिवर्तन की प्रक्रिया के लिए" इस्तेमाल होता है।[52] यह आयत हमें कहती है, "[मसीही व्यक्ति] आराधना के लिए केवल मसीह के प्रायश्चित के काम में विश्वास के द्वारा पाप माफ़ किए जाने वाला विवेक पाने और मसीही बपतिस्मे में भाग

लेने के बाद ही आता है।''[53] ''शुद्ध जल'' निश्चय ही बपतिस्मे के समय व्यक्ति के पापों के मिटाने जाने को कहा गया है। यहूदी सांस्कारिक दृष्टिकोण से ही बपतिस्मा पाया हुआ व्यक्ति शुद्ध है। परन्तु उसकी डुबकी के बाद पानी अशुद्ध नहीं हो जाता, जैसे किसी यहूदी स्नान के बाद इसे गंदा हो गया माना जाता था। इसके अलावा मसीही व्यक्ति की शुद्धता अस्थाई नहीं है, जैसी व्यवस्था के प्रबन्ध में होती थी क्योंकि जो मसीह में है, उसे निरन्तर उसके प्रभु द्वारा शुद्ध किया जाता है (1 यूहन्ना 1:7)।[54]

पुराने नियम में लहू छिड़के जाने को आम तौर पर शुद्ध किए जाने से जोड़ा जाता था और इस कारण इसकी सांकेतिक प्रासंगिकता नये नियम में मसीह के लहू से है (इब्रानियों 9:13, 14; 11:28)। पूरे व्यक्ति को पवित्र किया जाता है, इसलिए विवेक (मन) और देह दोनों शामिल होते हैं (यूहन्ना 3:5)। 1 पतरस 1:2 ''छिड़काव'' यीशु के लहू को एक आयत में आज्ञापालन और आत्मा के पवित्र करने के काम के साथ जोड़ता है। स्पष्टतया यह इस बात का विवरण है कि उद्धार कैसे पाया जाता है।

मसीह की वाचा ''नया और जीवित मार्ग'' है, जिसके द्वारा हम स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं। उसकी मृत्यु और मध्यस्थता के कारण हमें परमेश्वर की उपस्थिति में जाने और शुद्ध विवेक और शुद्ध मनों के साथ उसके सामने खड़े होने का अवसर मिला है। यह बड़ा उपहार हमारे विश्वास का आधार और परमेश्वर की सेवा के लिए हमारी प्रेरणा है।

आयत 23. डॉक्ट्रिन के मामलों की अपनी चर्चा को समाप्त करके लेखक नये और जीवित मार्ग में बने रहकर मसीह के विश्वासयोग्य बने रहने की बुनियादी बातों की ओर मुड़ गया। इब्रानियों 10:23–25 दो और ''आओ'' की आज्ञा के इर्द गिर्द घूमता है, जिसमें पहली आज्ञा आयत 22 में दी गई है। आयत 25 को ''आओ'' का चौथा वचन कहा जा सकता है।

आयत 23 का आरम्भ इस भाग में दूसरे आओ के लिए और शब्द के साथ होता है। विचार यह है कि ''अब जब कि हम ने जल में स्नान कर लिया है तो आओ विश्वास को पकड़े रखें।''

लेखक ने मसीही लोगों को प्रोत्साहित किया कि थामे रहें। इब्रानियों की पुस्तक में यह एक मुख्य विचार है। 3:6 के अनुसार भरोसे में बने रहना व्यक्ति को कलीसिया या परमेश्वर के घर का सदस्य बने रहने में सहायता करता है। 3:14 में हम पढ़ते हैं कि अन्त तक बने रहना मसीह के साथ सहभागी होने का आवश्यक भाग है। यहां पर तर्क रोमियों 6:1–5 वाला ही है जहां पवित्र लोगों को जिन्हें बपतिस्मा दिया गया है, पाप में न बने रहने को समझाया गया है। अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की परमेश्वर की वफ़ादारी हमारे लिए एक प्रोत्साहन है, क्योंकि अनन्त जीवन की आशीष तभी फलवंत होती है।

''थामे रहने'' का आग्रह मसीही जीवन में आवश्यक है। कैल्विनवादी शिक्षाओं के अनुसार जो सचमुच में परिवर्तित हुआ है वह उसका उलट नहीं कर सकता। बेशक यदि कोई अनुग्रह से गिर नहीं सकता तो विश्वास को थामे रहने की चिंता का कोई वैध कारण नहीं होगा।

अंगीकार के यूनानी शब्द *homologia* का अर्थ है जिसे स्वीकार किया गया, अंगीकार किया गया या सच माना गया। किसी समय हमने मसीह में अपने विश्वास को माना, जो प्रभु के साथ अपने चलने के आरम्भ में तीमुथियुस के ''अच्छा अंगीकार'' करने जैसा ही हो सकता है। पौलुस ने इसे पुंतियुस पिलातुस के सामने यीशु की स्वीकृति के अनुसार मिलाया (1 तीमुथियुस

6:12, 13)। यदि किसी ने अपने विश्वास और परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रभु में अपनी आशा को खुलेआम बताया है तो अपने विश्वास के अनुसार जी कर खुले रूप में स्वीकार करते रहने की ज़िम्मेदारी उसकी है। ऐसा वह दूसरे लोगों को जिन्हें उसकी तरह मज़बूत बनने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है, अपने विश्वास को दिखाकर आंशिक रूप में ऐसा करता है (देखें 3:12, 13)। हमारा प्रभु हमारे साथ वफ़ादार है और हमें भी उसके वफ़ादार होना आवश्यक है।

अपनी आशा के "अंगीकार" की बात इब्रानियों की पुस्तक में एक और बुनियादी विचार है। "आशा" जो होनी आवश्यक है उसमें पूरा मसीही धर्म समा जाता है; परमेश्वर का हमारा ज्ञान आशा की प्रेरणा देता है। इस आशा को उन बाधाओं के बावजूद जो हमारे जीवन में आती है, बनाए रखा जा सकता है, क्योंकि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में वफ़ादार है।

आशा विश्वास की एक आवश्यक चीज़ है (11:1)। बिना यह विश्वास किए कि परमेश्वर "अपने खोजने वालों को प्रतिफल" देता है (11:6)। वास्तविक विश्वास को दिखाया नहीं जा सकता, मसीह हमारी आशा की मुख्य बात है (6:19, 20)। उसमें हमें पक्की आशा है जिसमें हम आनन्द कर सकते हैं (3:6; NKJV)। आशा प्राण के लिए "लंगर" है (6:11, 12, 18–20)।

हम "थामे रह" सकते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा है कि अपना वचन पूरा करे। परमेश्वर अपना वचन निभाएगा, चाहे यह स्वर्ग में विश्राम की बात हो, क्षमा की या हमारी विनतियां लेकर अनुग्रह के सिंहासन के निकट आने के अधिकार की। बिना डोले हमें वैसे ही वफ़ादार होना चाहिए जैसे परमेश्वर हमारे साथ वफ़ादार है। उसकी पक्की वफ़ादारी हमें आशावान बनाती है।

आयत 24. इस आयत में एक और "आओ" का संकेत है: और प्रेम, और भले कामों में उकसाने के लिए एक दूसरे की चिन्ता किया करें। NEB का अनुवाद है कि "हमें देखना चाहिए कि हम में से हर कोई दूसरों को प्रेम करने और भलाई करने में उत्तेजित करने का भरसक प्रयास करे।"

"उकसाने" एक ऐसा मज़बूत शब्द है जिसे "दौरा पड़ने" के लिए इस्तेमाल किया जाता था। यदि "भड़काना" (KJV)[55] का संकेत आज नकारात्मक न होता तो इस्तेमाल के लिए यह बेहतरीन शब्द हो सकता था। यहां *paroxusmos* शब्द एक दूसरे के लिए और प्रेम बढ़ाने और सेवा के भले कार्यों को करने के उद्देश्य से दूसरों को किया जाने वाला मज़बूत आग्रह है। इब्रानियों की पुस्तक में इस अभिव्यक्ति का अर्थ "चिढ़ाने के नकारात्मक अर्थ" के बजाय भले उद्देश्य से भड़काना है।[56]

मसीही प्रेम का व्यावहारिक परिणाम होना आवश्यक है। प्रेरितों 15:39 में *paroxusmos* शब्द का अनुवाद "ऐसा विवाद उठा" हुआ है। क्या इसका अर्थ यह है कि हमें एक दूसरे को बड़े काम करने के लिए इतना आग्रह करना चाहिए कि "झगड़े" की नौबत आ जाए (KJV)? यदि समझाने से कोई भले काम नहीं करता तो हमारे आग्रह से झगड़ा हो सकता है। 1 कुरिन्थियों 13:5 में यह कहते हुए कि मसीही प्रेम "झुंझलाता नहीं" इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है। हमें प्रेम में एक दूसरे को उकसाने के लिए पवित्र शास्त्र के साथ-साथ, हर मज़बूत और उचित भावना का इस्तेमाल करना चाहिए।

आयत 24 में ''प्रेम'' यदि ''मसीह के लिए प्रेम'' है तो आयत 25 हमें बताती है कि हमें आराधना सेवाओं के लिए उपस्थित रहना चाहिए, जहां इसे बढ़ावा मिलता है और जहां मसीही आराधना होती है। यदि यह एक दूसरे के लिए प्रेम है तो भी इसी कार्य की मांग की जाती है कि हम पवित्र लोगों के साथ निरन्तर आराधना करें ताकि भाइयों के प्रति प्रेम में बढ़ सकें।

आयत 25. आगे ''आओ'' का संकेत मिलता है: ''आओ'' एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें। दृढ़ता इस आयत में बढ़ावा दी गई गतिविधियों के द्वारा यानी ''इकट्ठा होकर'' और एक दूसरे को समझाते रहकर पाई जाती है। ''इकट्ठा होना'' के लिए शब्द *episunagōgē* का अर्थ ''किसी सभा में इकट्ठे आना'' है। याकूब 2:2 के साथ इस आयत का संकेत हो सकता है कि ''आराधनालय'' (*sunagōgē*) का इस्तेमाल पहली सदी की कलीसिया के लिए इकट्ठा होने के स्थान के रूप में किया जाता था।[57] पहले इस शब्द का अर्थ ''सभा'' होता था परन्तु बाद में इसका अर्थ ''मिलने का स्थान'' हो गया।[58] परन्तु यरूशलेम के आराधनालयों में इकट्ठा होने वाले सारे समूह जहां आराधनालय होते थे बदल दिए गए हो सकते हैं। उनके मिलने वाले घर कलीसिया की सभाओं के लिए इस्तेमाल किया जाने लगे होंगे। इस सम्भावना को ध्यान में रखते हुए यह कहना शायद पूरी तरह से सही न हो कि नये नियम के समय में कोई ''चर्च बिल्डिंग'' यानी गिरजाघर नहीं था।

मसीही लोगों को एक दूसरे को प्रोत्साहित करने और समझाने के उद्देश्य से इकट्ठे होना होता था (आयत 24)। लेखक ने आग्रह किया कि यह प्रतिदिन हो (3:12, 13)। आयत 25 ''इकट्ठा होने के लिए प्रोत्साहित'' करने को नहीं कह रही बल्कि ''प्रोत्साहित करने के लिए इकट्ठा होने'' को कह रही है। आरम्भिक मसीही बिना इकट्ठा हुए एक-दूसरे को प्रोत्साहित और दृढ़ कैसे कर सकते थे ? उन्हें विश्वासयोग्य बने रहने की इस ताड़ना को पूरा करने के लिए इकट्ठा होना आवश्यक था। आत्मिक उन्नति, शान्ति और प्रोत्साहन इकट्ठा होने के आवश्यक उद्देश्य हैं (1 कुरिन्थियों 14:26-33)। लेखक ने अन्य विश्वासियों के साथ लगातार मिलता न रहने वाले के लिए प्रभु के वफ़ादार होने की सम्भावना को नहीं माना। ''अकेला'' व्यक्ति विश्वास करने वाला हो तो सकता है, परन्तु आम तौर पर वह मज़बूत नहीं होता।

इसका अर्थ यह है कि यह आयत केवल प्रभु के दिन साप्ताहिक संगति में उपस्थिति होने का ही आग्रह नहीं कर रही, चाहे यह भी इतना महत्वपूर्ण है। बल्कि यह ताड़ना इस बात की मांग करती है कि और सभाओं में साथी मसीही लोगों को मज़बूत करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए। इसलिए आवश्यकता के समय में विशेष आराधना सभाओं का होना उपयुक्त है, क्योंकि पवित्र लोगों के बड़े समूह में स्वर्गीय पिता सामने की गई उनकी प्रार्थना की सामर्थ को कौन समझ सकता है ?

कलीसिया की सभाओं को ''छोड़ना'' (*egkataleipō*) बेदीनी का पक्का निशान या इस बात का चिह्न है कि जल्द ही बेदीनी या विश्वास-त्याग होने वाला है। ''छोड़ें'' शब्द का अर्थ ''पीछे छोड़ना'' या ''त्याग देना'' है। पवित्र लोगों की सभा की उपेक्षा करना आम तौर पर विश्वास के पूरी तरह से छोड़ देने का कारण बनता है। इस पत्री के आरम्भिक पाठकों पर व्यवस्था के अनुसार मन्दिर की आराधना में बने रहने के लिए यहूदी प्रभावों का दबाव था। लेखक की ताड़ना थी कि वे मसीह के वफ़ादार बने रहें। उन्होंने अभी छोड़ा नहीं था, परन्तु ऐसी

परीक्षाओं में कालांतर में विश्वासयोग्य बने रहे थे (आयतें 32-36)।

जैसे जैसे इन पाठकों ने उस दिन को निकट आते देखना था, वैसे वैसे उन्हें भाइयों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होनी थी। कोई व्यक्ति अपनी मृत्यु या प्रभु के द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में "दिन को निकट आते" नहीं देख सकता। कमज़ोर सेहत वाला या बूढ़ा और कमज़ोर हो रहा व्यक्ति समझ सकता है कि मृत्यु निकट है परन्तु इनमें से किसी भी घटना के समय पक्की जानकारी के लिए परमेश्वर की ओर से प्रकाशन का होना आवश्यक था।

मसीही लोग यरूशलेम के आने वाले विनाश को ईश्वरीय प्रकाशन से "देख" सकते थे, जिसकी भविष्यद्वाणियां मत्ती 24, मरकुस 13 और लूका 2 में दर्ज हैं। यीशु की बातों ने विशेषकर यहूदीवादी यहूदियों को "उस दिन के निकट आने" के समय को जानने का तरीका बता दिया। वह "दिन" 70 ईस्वी में मन्दिर के विनाश के बाद यरूशलेम की घेराबंदी और इसके गिरने के द्वारा हज़ारों यहूदियों के कष्ट का समय भी रहा होगा।

हम मसीह के द्वितीय आगमन की भविष्यवाणी नहीं कर सकते क्योंकि उस समय का संकेत देने का कोई चिह्न नहीं दिया गया है। टाइटस और उसकी रोमी सेना के हाथों यरूशलेम के गिरने से सम्बन्धित, यीशु द्वारा चिह्न दिए गए, न कि अन्त समय की उसकी भविष्यवाणियों में। जब यीशु ने यरूशलेम के अन्त की भविष्यद्वाणियां कीं तो उसने घोषणा की कि अन्त के समय या अपने द्वितीय आगमन के बारे में उसे स्वयं भी पता नहीं था (मत्ती 24:36)। उसे एक एक बात का पता था कि क्या होने वाला है, इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु नगर पर रोया था (लूका 19:41, 42)। (पुस्तक में आगे "और अध्ययन के लिए: 'चिह्न' और 'निकट आता दिन' " देखें।)

आयतें 23 से 25 में लेखक जो कह रहा था मोज़ज़ स्टुअर्ट ने उसकी अच्छी समीक्षा बताई है: " 'हे भाइयो, बेदीनी से बचने के लिए जो भी कर सकते हो, वह करो। और ऐसा और भी करो क्योंकि यहूदीवाद की वापसी अब बहुत गलत समय पर होगी; समय निकट है, जब यहूदी मन्दिर और राज्य तबाह होने वाले हैं।' "[59]

## चेतावनी: पाप जो मृत्यु का कारण बनता है ( 10:26-31 )

[26]क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के लिए यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। [27]हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। [28]जब कि मूसा की व्यवस्था का न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। [29]तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। [30]क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा, कि पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा: और फिर यह, कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। [31]जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने वाले के धर्मशास्त्रीय विचारों से 10:26-31 जैसी आयतों की उसकी समझ को बहुत प्रभावित करेंगे। स्वाभाविक ही है कि "एक बार उद्धार होने पर सदा के लिए उद्धार हो गया" की शिक्षा को मानने वाले व्यक्ति को इस वचन से सचमुच में दिक्कत होगी। कुछ लोगों का कहना है कि यह केवल पहली सदी के मसीही बनने वाले यहूदियों के लिए है, यानी उनका मानना है कि यहूदी मत में लौट जाने वाला व्यक्ति वास्तव में कभी बदला नहीं था। इस हवाले का अर्थ ऐसा नहीं हो सकता। जैसा कि 6:4-6 के अपने अध्ययन में हमने देखा था कि सचमुच बदलने वाले लोग भी विश्वास से गिर सकते हैं।

लेखक ने तीन दृष्टिकोणों से बेदीनी यानी विश्वास-त्याग के भयंकर पाप को विस्तार से बताया।

आयत 26. इस आयत में बताया गया पाप जान-बूझकर किया जाने वाला पाप है। यह विद्रोह करते रहना है।

क्योंकि (*gar*) इस विचार को पिछले पैरे से जोड़ देता है। इकट्ठा होने को न छोड़ने की ताड़ना के बाद डराने वाली बात आती है। चेतावनी पाठकों को कलीसिया की संगति को छोड़ने और उससे प्रभु को छोड़ने के भयंकर परिणामों को समझाने के लिए दी गई थी। यह केवल किसी कमज़ोर मसीही या नये बने मसीही के लिए नहीं हो सकता। यह उस पर लागू होता है जो जान-बूझकर विश्वास से फिर गया है (बहुत करके 6:4-6 में बताए गए लोगों की तरह)।

आराधना सभाओं को नज़रअन्दाज़ करना बेदीनी की ओर ले जाता है और यहां इसके अत्यधिक खतरे की बात करने का यही कारण है। "इकट्ठा होना छोड़ने" से लेखक जान-बूझकर ठुकराए जाने से मसीह को छोड़ने के खतरे की ओर बढ़ गया। आज के प्रसिद्ध विचार में दोनों को एक दूसरे से जोड़ा नहीं जाता है। बहुत से लोग कलीसिया को तो छोड़ देते हैं पर फिर भी मसीह के साथ जुड़े रहने का दावा करते हैं। ऐसा नहीं हो सकता। जब हम जान-बूझकर कायरता या उदासीनता से इकट्ठा होना छोड़ते हैं तो यह परमेश्वर के नियमों के खुले आम अपमान का कारण बनता है। तब आम तौर पर कायरता के पाप को जहां तक हो सके, कठोर भाषा में डांट लगाई जाती होगी (देखें प्रकाशितवाक्य 21:8)।

हम कहकर लेखक ने पूर्ण विश्वास त्याग की हद तक लोगों की चर्चा में धीरे से अपने आपको मिला लिया। यह मिलाया जाना उसकी ओर से एक उपकार था।

यूनानी धर्मशास्त्र में जान-बूझकर के लिए शब्द को ज़ोर देने के लिए वाक्य के पहले रखा गया है। यह आयत जान-बूझकर और ढिठाई से किए गए पाप की बात करती है। "स्पष्टतया पूरी आयत खुले विद्रोह और बेदीनी पर चिंता करती है।"[60]

आयत 26 में वर्णित पहचान (*epignōsis*) का अर्थ प्राथमिक जानकारी (*gnōsis*) के विपरीत "पूरी तरह से जानना" है। जान-बूझकर पाप करने वाले इस व्यक्ति को सामान्य *gnōsis* से अधिक मिला था जिससे उसे वह सच्चाई मिली थी।[61] वह नया चेला नहीं हो सकता था क्योंकि आयत सच्चाई का पूरा ज्ञान रखने वाले के लिए है जिससे वह सोच-समझकर पीछे हट रहा था। आयत "पाप के जान-बूझकर किए जाने को प्रकाशमान करती है," क्योंकि " 'सच्चाई' की समझ-भरी समझ पहले ही पा ली गई।"[62]

इसका अर्थ यह हुआ कि यह भाग उन लोगों से व्यवहार करता है जो किसी समय सचमुच

में बदले थे। 2 तीमुथियुस 3:7 के अनुसार कुछ लोग "सदा सीखते तो रहते हैं पर सत्य की पहचान [*epignōsis*] तक कभी नहीं पहुंचते।" रोमियों 10:2 उन यहूदियों की बात करता है जिनमें "परमेश्वर के लिए धुन" तो थी परन्तु इस "पहचान" की कमी थी। इब्रानियों 10:26 उसकी बात करता है जिसके ज्ञान में मसीही विश्वास का "पक्का समर्पण" था।[63] यदि किसी का इतना विश्वास हो और वह गिर जाए, जो कि वह स्पष्टतया कर सकता है, उसका भविष्य खतरे में है। उसके लिए जो बदल चुका है, जिसने इस पहचान को पाया और फिर जान-बूझकर पाप करता रहता है, कोई आशा नहीं है। ऐसे व्यक्ति को मूर्खता में मुड़ जाने से बढ़कर ज्ञान है।

लेखक की चेतावनी में सावधानी से या अनजाने में किया पाप नहीं बल्कि विद्रोह या ढिठाई से किया गया पाप बताता है।[64] ऐसा पाप करने वाले व्यक्ति को 1 यूहन्ना 2:19 वाले लोगों से मिलाए जाने की आवश्यकता नहीं है जिनके लिए कहा गया था, "वे निकले तो हम ही में से थे, पर हम में के नहीं।" ऐसे बहुत से लोग हो सकते हैं जो वास्तव में कभी बदले ही नहीं थे। अन्य लोग बदल तो गए पर उन्होंने गलत व्यवहार को बनाए रखा जिसने उनसे पाप करवाया, जैसा कि शमौन जादूगर ने किया (प्रेरितों 8:13, 18-24)। एक पाप के बाद की उसकी परिस्थिति का वर्णन करते हुए शब्दों का अध्ययन करें, क्योंकि उसी एक पाप के लिए उसे मन फिराने को कहा गया था। प्रेरितों 8:22 "अपनी *इस* बुराई" की बात करता है। इसके विपरीत इब्रानियों 10:26 वाला पाप ढिठाई का पाप है और यह जीवते परमेश्वर से दूर ले जाने का कारण बनता है (3:12)। अन्य संस्करण इस बात को स्पष्ट करने में सहायता करते हैं। TEV में "यदि हम सोच समझकर पाप करते रहें" और NIV में "यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें" है।[65]

ऐसे काम का परिणाम क्या है? तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। जब कोई मसीह से फिर जाता है तो क्षमा पाने के लिए और कोई ढंग नहीं बचता है। क्योंकि मसीह "सब के लिए एक ही बार" मरा, इसलिए उसकी भेंट दोहराए जाने की आवश्यकता नहीं है। उद्धार के लिए कोई और ढंग नहीं दिया गया था। इस एक मार्ग को पूरी तरह से नकार दिए जाने पर उद्धार जब्त हो जाता है। सताव के सामने विश्वास-त्याग का पाप आरम्भिक कलीसिया में एक रोज़ की समस्या थी।

पतरस ने उनकी बात की जो पाप से "बच गए" थे, परन्तु फिर उसी पाप में लौट गए थे जिसे उन्होंने छोड़ा था। उसने कहा कि उनकी "पिछली दशा पहली से भी बुरी हो" जानी थी (2 पतरस 2:20-22)। कैल्विनवादी लोग यह दावा करेंगे कि पतरस उसकी बात कर रहा था जो "पहली दशा" में था, जिसने उसे कभी छोड़ा नहीं था। ऐसा व्यक्ति पाप से कभी बचा ही नहीं है। क्या सचमुच में बदले हुए व्यक्ति का विश्वास-त्याग करना या बेदीन होना सम्भव है? पौलुस ने कहा कि हां। रोमियों 11:22 पढ़ें, जो सम्भवतया इस मुद्दे पर नये नियम की सबसे स्पष्ट बात है, और गलातियों 5:4 भी पढ़ें।

जब सचमुच में बदला हुआ व्यक्ति विश्वास त्याग देता है तो इतनी गम्भीर बात है कि पतरस ने भी इस बात पर आश्चर्य किया कि दोषी व्यक्ति मन फिराकर क्षमा प्राप्त कर सकता है या नहीं (प्रेरितों 8:22)। मसीह को एक बार जान लेने के बाद कोई उससे इतना दूर क्यों जाएगा? यह स्पष्ट है कि विश्वास त्याग करने यानी बेदीन होने वाले को मसीह के स्वभाव, उसकी सामर्थ उसकी ईश्वरीयता और उसके काम की समझ नहीं आई, वरना वह प्रभु के साथ अपना नाता

कभी न तोड़ता।

आयतें 27, 28. लेखक ने जान-बूझकर किए जाने वाले पाप को उस पाप के रूप में भी देखा जो दण्ड का कारण बनता है। विश्वास-त्याग के कारण दण्ड का एक भयानक बाट जोहना होता है। "भयानक" (*phoberos*) नये नियम में केवल तीन बार मिलता है, वह भी इसी पत्री में (आयतें 27, 31; 12:21)। इन तीनों आयतों में यह परमेश्वर से मिलने या उसके निकट आने की बात करता है। KJV में इस "भयानक बाट जोहने" को "न्याय और भयंकर नाराजगी की भयभीत करने वाली उम्मीद" के रूप में दिखाता है। आयत 26 में बताए गए व्यक्ति के लिए न्याय तो पक्का है और नरक में अनन्तकाल को टाला नहीं जा सकता। किसी को भी यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर पाप में डूबे हुए अपने शत्रुओं को दण्ड देने में ढिलाई करता है। दोषियों को दण्ड आग के साथ दिया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:8; मत्ती 25:30, 41)। यह कोरह के विद्रोह और उस आग का संकेत हो सकता है जिससे वह अपने परिवार सहित नष्ट हो गया था (गिनती 16:1-35)। दुष्टों पर परमेश्वर के न्याय को आम तौर पर आग में आने के रूप में दिखाया जाता है (इब्रानियों 12:29)।

लगता है कि जान-बूझकर बुराई करने वाले के लिए मूसा की व्यवस्था में कोई क्षमा नहीं थी। मूसा की व्यवस्था के अधीन दण्ड कठोर था (2:2ख), परन्तु यह न सोचें कि नये युग में अनुग्रह के बड़े प्रदर्शन के साथ हम पाप दण्ड से बच जाएगा। आयत 28 में व्यवस्थाविवरण 17:2-7 का संकेत हो सकता है, जहां जान-बूझकर किए, जाने वाले पाप के लिए मृत्युदण्ड का आदेश दिया गया। परन्तु यह केवल तभी हो सकता था जब दो या तीन जनों की गवाही हो। किसी इस्राएली को मृत्यु दण्ड का दोषी ठहराने के लिए केवल एक गवाह की बात काफ़ी नहीं होती थी। इस नियम को मानते रहकर और किसी के चरित्र पर केवल एक व्यक्ति के आरोप को ठुकराकर हम अच्छा करेंगे (1 तीमुथियुस 5:19)। पुरानी वाचा में जब कोई आरोपी सचमुच में दोषी पाया जाता तो उसे बिना दया के मार डाला जाता था (आयत 28)।

आयत 29. छोटे से बड़े का एक और तर्क दिया जाता है। पुरानी वाचा के अधीन दण्ड इतना बुरा था कि हर अपराध के लिए उसके अनुसार ठीक ठीक बदला मिलता था (इब्रानियों 2:2)। नई वाचा के अधीन दण्ड उससे भी बुरा है! यदि पुराने नियम में मृत्यु का आदेश था तो मसीह का इनकार करने पर हमारे लिए मृत्यु से कम दण्ड कैसे हो सकता है? जब लोगों को अधिक ज्ञान और आशिषें मिली हों तो उनसे अधिक ही मांगा जाता है (लूका 12:47, 48)।

जैसा कि इस चेतावनी से संकेत मिलता है, विश्वास-त्याग करने वाले को "और भी भारी दण्ड" के लिए ज़ोर दिया जाता है। इस दण्ड के भारी होने के कारण तीहरे विवरण दिए गए हैं:

1. कहा गया है, तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, ...? (आयत 29क)। यह "वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए फिर से क्रूस पर चढ़ाते हैं" (6:6) से मेल खाता है। यह विचार कि कुछ लोगों ने परमेश्वर के पुत्र को "पांवों से रौंदा" है, मत्ती 7:6 से मेल खाता है जहां कुत्तों के कीमती मोतियों को पैरों तले रौंदने की बात कही गई है (सुसमाचार का प्रतीकात्मक हवाला)। इब्रानियों की पत्री बताती है कि परमेश्वर के पुत्र को रौंद डालना पिता को रौंदने जैसा ही है।[66] ऐसे पापी ने "परमेश्वर के पुत्र" को तुच्छ माना है। इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता। उसने मसीह के बलिदान का अपमान किया है; इससे बड़ा पाप और नहीं

हो सकता। किसी मसीही व्यक्ति के लिए जीवन में इससे भयानक बात और क्या हो सकती है?

लेखक ने विश्वासियों को मसीह का जिससे उन्होंने प्रेम किया था तिरस्कार न करने का आग्रह करते हुए उन्हें झंझोड़ना चाहा। उनके कुछ जानकारों ने पहले ही यह भयानक कार्य किया था। हम ऐसे कार्य के मसीह के शत्रुओं द्वारा किए जाने की उम्मीद तो कर सकते हैं, परन्तु उन से नहीं जो उसके खून-खरीदे हों। ऐसा व्यक्ति दोषी न होता यदि वह क्रूस पर ठट्ठा उड़ाने वालों के बीच में से होता। जो मसीही जानता है कि वह क्या कर रहा है और फिर भी मसीह के द्वारा परमेश्वर द्वारा किए गए अनुग्रह को अस्वीकार करता है वह विश्वास-त्याग का दोषी है। यह बात "यीशु मसीह के विरुद्ध जबर्दस्त वैरभाव" को दर्शाती है।[67] यह बात "व्यक्ति के बपतिस्मे के इनकार की हो सकती है जिसमें मसीह को पहनना" (गलातियों 3:27) और उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में उसके साथ मिल जाता है (रोमियों 6:3-5; कुलुस्सियों 2:12)।[68]

"एक बार बचाए गए, तो सदा के लिए बचाए गए" की शिक्षा में विश्वास रखने वालों को इस "कड़े दण्ड" से परेशानी है। या तो वे यह दावा करें कि इसका अर्थ दण्ड से कम है जो कि सिखाना बहुत कठिन है, या फिर वे अपनी आरामदायक शिक्षा को छोड़ दें।

2. विश्वास-त्याग करने वाले व्यक्ति ने वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है (आयत 29ख)। इसका अर्थ है कि उसने लहू को "अपवित्र," "सामान्य," या "अशुद्ध" माना है।[69] जिस लहू ने नई वाचा की पुष्टि करके पश्चात्तापी व्यक्ति को पापों की क्षमा दिलाई है वह बहुत ही अनमोल है। यीशु के लहू को इतना तुच्छ मानना इसे पुराने नियम के बलिदानों में इस्तेमाल किए जाने वाले जानवरों के लहू से मिलाने से भी बदतर है। जिसे कभी "पवित्र ठहराया गया" कहा गया हो और जो यीशु के लहू के द्वारा बचाया गया हो; वह मसीही रहा है, पर अब नहीं है।

फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस ने "वाचा का लहू" के जश्न में साप्ताहिक भोज के लिए जाने को देखा:

> भोज का कटोरा, जिसमें से हम अपने छुड़ाने वाले के स्मरण में पीते हैं, उसके लहू में नई वाचा है (1 कुरिन्थियों 11:25)। हफ़्ता दर हफ़्ता बेदीन व्यक्ति मसीह की देह और लहू में भाग लेता रहा है, इस प्रकार उसने पाप को धोने के लिए मसीह की ओर ताकने को स्वीकार किया है।[70]

अपने पुराने भरोसे के इतनी बार स्मरणों के बाद प्रभु की देह को छोड़ देना लहू को अपवित्र करने का दोषी बनाता है। उसने मसीह के सिद्ध बलिदान के साथ ऐसे व्यवहार किया है जैसे वह अपवित्र हो।

3. इस व्यक्ति ने अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया [enubrizō] (या आत्मा को "नाराज़ किया")[71] (आयत 29ग)। यह इस बात का सुझाव देता है कि उसे अनुग्रह आत्मा के द्वारा दी दिया गया था। वह अनुग्रह बांटता है इस कारण "अनुग्रह का आत्मा" कहा गया है। अनुग्रह से वह हमारी निर्बलताओं में हमारी सहायता करता (रोमियों 8:26) और पाप के प्रति निरुत्तर करता है (यूहन्ना 16:8)। यह यकीन आत्मा द्वारा पतरस के वचन सुनाने के द्वारा

दिलाया गया था (प्रेरितों 2:36–38, उदाहरण के लिए)। स्तिफनुस की शिक्षा को नकार कर महासभा उसके संदेश के द्वारा अपने हृदयों पर आत्मा के काम करने का सामना कर रही थी (प्रेरितों 7:51)।

जब कोई व्यक्ति मसीही विश्वास से फिरकर यहूदीवाद की ओर लौट जाता है तो वह पुत्र और आत्मा दोनों का पाप करता है। उसने "परमेश्वर के पुत्र का तिरस्कार किया है ... और अनुग्रह के आत्मा को नाराज़ किया है" (ESV)। यह ईश्वरीय व्यवस्था का पाप है।[72] बेदीन की तरह जो किसी समय सच्चाई को जानता था परन्तु इससे पूरी तरह से फिर गया है, आत्मा का अपमान करने का अर्थ सबसे कठोर यानी अनन्त मृत्यु के योग्य होना है। परमेश्वर के वचन की सच्चाई के प्रमाणों को नकारने का उसका कार्य नास्तिकता की उसकी हद है। वह न्याय में दण्ड के बिना किसी और बात की राह नहीं देख सकता, जब "आग का ज्वलन" उसे भस्म कर देगा (10:27)। यह स्पष्ट है कि दोषी व्यक्ति ने "[पवित्र] आत्मा की निंदा" की है (मत्ती 12:31, 32; मरकुस 3:28, 29; लूका 12:10) और उसने उद्धार की सारी आशा को खो दिया है।[73]

**आयतें 30, 31.** अपने सारे प्रभावों के कारण बेदीन व्यक्ति का पाप भयभीत कर देने वाला है। इसे सोचना भी कंपकंपी लगा देता है।

अध्याय 10 के इस अन्तिम भाग की चेतावनियों के साथ लेखक अपने पाठकों को चोटी के किनारे से, जहां वे अपनी आत्मिक मृत्यु के लिए जाने वाले थे, खींचने की कोशिश कर रहा था। आयत 30 का आरम्भ निश्चितता की इस बात से होता है कि हम उसे जानते हैं। इस वाक्यांश का अर्थ है कि हम जानते हैं कि परमेश्वर अपनी बात को पूरा करेगा और अपनी धमकियों को अमल में लाएगा। "पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा" वाक्यांश बिल्कुल इसी रूप में रोमियों 12:19 में इस्तेमाल किया गया है।

आयत 30 के दोनों उद्धरण इब्रानी धर्मशास्त्र या LXX की वर्तमान प्रतियों के साथ पूरा पूरा मेल नहीं खाते हैं। बेशक सच्चाई वही बताई गई है। लेखक बिल्कुल पौलुस की तरह किसी ऐसी जगह से बता रहा होगा जिसका अब पता नहीं है। उसने इस आयत के किसी प्रसिद्ध रूप को दोहराया हो सकता है या उसने इसे रोमियों की पुस्तक से लिया हो सकता है। शायद उसने अपने ही अनुवाद का इस्तेमाल किया।[74] केवल एक सम्भावना जो रह जाती है वह यह है कि यह पौलुस से या उसके किसी निकट साथी से मिला। पहला उद्धरण व्यवस्थाविवरण 32:35–41 पर आधारित है और इसका एक संस्करण भजन संहिता 135:14 में मिलता है। लेखक पवित्र शास्त्र की बात को एक मान्य ढंग, जिसमें वचन का सही अर्थ बना रहे, अपने शब्दों में बता रहा था।

परमेश्वर का "पलटा" बदला लेने के नहीं, बल्कि न्याय की बात है। उसका बदला लेना अपराध के बराबर होगा। वह यह तय कर सकता है कि यह क्या होना चाहिए, जबकि हम नहीं कर सकते। किसी अपराधी के लिए किसी दूसरे व्यक्ति की हत्या का दोषी पाए जाने पर जज यह आदेश देता है कि उसका प्राण लिया जाए, तो हम उसके प्राण की कीमत को उस व्यक्ति से कैसे मिला सकते हैं जिसे उसने मार डाला? न्याय की परिभाषा केवल परमेश्वर कर सकता है; इसी कारण हमें हमारे जीवनों के लिए उसके द्वारा ठहराए गए नियमों पर इतना निर्भर होना चाहिए।

धर्मी व्यक्ति के लिए परमेश्वर के हाथों में पड़ना अच्छी बात है, "क्योंकि" जैसा कि दाऊद ने कहा है, "उसकी दया बड़ी है" (2 शमूएल 24:14)। शत्रुओं के हाथों में पड़ना पूरी तरह

से अपने आपको को उनके रहमों-कर्म पर छोड़ देना होता था। विश्वास-त्याग करने वाले के लिए इसकी कीमत अनन्तकाल के लिए निकाले जाना था (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। भयानक स्थिति है (मत्ती 25:46; प्रकाशितवाक्य 14:11; 20:10)।

आयत 31 में अनुवादित शब्द भयानक उसी शब्द का अनुवाद है जिसका इस्तेमाल आयत 27 में भी हुआ है। कोई भी परमेश्वर को मूर्ख नहीं बना सकता। संसार का सबसे तरसयोग्य व्यक्ति वह है जो किसी समय मसीह में था परन्तु अब उसकी संगति से बाहर हो गया है। जीवते परमेश्वर के "हाथों में पड़ना" सचमुच में भयानक बात है।[75] मसीह के वफ़ादार व्यक्ति के लिए सर्वशक्तिमान के "हाथ" कोमल और दया से भरे हो सकते हैं। पलटा लेने की उसकी धमकी के पीछे किसी के लिए भी जो सचमुच में मन फिराकर बाड़े में आता है, दया की पेशकश की गई है।

ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने परमेश्वर की दया को जानने के बावजूद पाप किया है, खतरनाक परिणाम मिलते हैं। विश्वास-त्याग करने वाले व्यक्ति को इस संसार के लिए चुकाई गई मसीह की कीमत का पता है, फिर भी वह उद्धारकर्त्ता से प्रभु के साथ तिरस्कार भरा व्यवहार करता है। इसलिए परमेश्वर का क्रोध और पलटा लेना उस पर आने वाला है।

### याद रखने के लिए उपदेश ( 10:32-39 )

[32]परन्तु उन पहिले दिनों को स्मरण करो, जिनमें तुम ज्योति पाकर दुखों के बड़े झमेले
में स्थिर रहे। [33]कुछ तो यों, कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ यों,
कि तुम उनके साझी हुए जिनकी दुर्दशा की जाती थी। [34]क्योंकि तुम कैदियों के दुख में भी
दुखी हुए, और अपनी सम्पति भी आनन्द से लुटने दी; यह जानकर, कि तुम्हारे पास एक
और भी उत्तम और सर्वदा ठहरने वाली सम्पत्ति है। [35]सो अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि
उसका प्रतिफल बड़ा है। [36]क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा
को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।

[37]क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है
जब कि आने वाला आएगा, और देर न करेगा।
[38]और मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा,
और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उससे प्रसन्न न होगा।

[39]पर हम हटने वाले नहीं, कि नाश हो जाएं पर विश्वास करने वाले हैं, कि प्राणों को बचाएं।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक को मालूम था कि इसके पाठकों को प्रोत्साहन की आवश्यकता है। 6:7, 9 की तरह, उसने 10:32-39 में उन्हें कुछ आशा दी। उसका मानना था कि उसके आरम्भिक पाठक अभी बेदीनी में नहीं गए हैं। उन्होंने इतना अधिक सह लिया था कि

अब वे छोड़ने नहीं वाले थे। उसने उन्हें स्मरण रखने को कहकर प्रोत्साहित किया।

आयत 32. मसीही लोगों के रूप में अपने आरम्भिक दिनों में, जो कि पहले काफ़ी समय होगा, इब्रानियों ने विरोध के बावजूद वफ़ादारी दिखाई थी। पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं में यदि कुछ लोग परिवर्तित होने वाले याजक थे (प्रेरितों 6:7), तो उन्होंने सताव के दौरान अपने आपको विशेष संकट में पाया हो सकता है, जो स्तिफनुस की शहादत के तुरन्त बाद आरम्भ हो गया था (प्रेरितों 7; 8)। वास्तव में याजकों के मसीही बनने में, जिन्हें माना जाता होगा कि वे मसीह को ग्रहण कर ही नहीं सकते क्योंकि वे अपने विश्वास के "पादरी" थे, ने अविश्वासी यहूदियों को यह जानकार चौंका दिया होगा, विशेषकर तरसुसवासी जेलोतेसी शाऊल को। विश्वास में नये नये लोगों का ठट्ठा उड़ाना कुछ लोगों के लिए मृत्यु से भी बुरा लगता होगा।

उन पिछले दिनों ... जिन में ... ज्योति पाकर का अनुवाद "तुन्हें ज्योति मिलने के बाद" (NKJV) और "तुम्हें ज्योति मिलने के बाद" (NIV) के रूप में अलग अलग किया गया है। यह ज्योति (देखें 6:4) निश्चय ही "सुसमाचार के प्रकाश" के द्वारा पाई गई थी (2 कुरिन्थियों 4:4; देखें इफिसियों 5:8, 11; कुलुस्सियों 1:13)। बाद की सदियों में मसीही लोग आम तौर पर इस अभिव्यक्ति को उनके बपतिस्मे के अवसर के लिए लागू करते थे। निश्चय ही उन्हें "ज्योति" अपने मनपरिवर्तन के समय या उससे थोड़ा पहले मिली थी। इसका अर्थ यह नहीं है कि जिसे वे पहले नहीं देख सकते थे उसे समझने के योग्य बनाने के लिए उन्हें कोई विशेष "भीतरी रौशनी" दी गई थी। पिन्तेकुस्त के दिन के लोगों की तरह उन्हें सत्य का समाचार सुनाकर विश्वास दिलाया गया था। जब निष्कपट मन वाले लोगों को मसीह के पुनरुत्थान का पता चला तो उन्होंने विश्वास करके आज्ञा मानी (प्रेरितों 2:32–41)। जो कुछ उन्होंने सुना था उसके कारण मन के बदलने के अनुभव के कारण अब वे ज्योति पाए हुए उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने मसीह को ग्रहण कर लिया था। वे सम्भवतया प्रेरितों 2 वाले पिन्तेकुस्त के दिन परिवर्तित होने वाले लोगों में से नहीं थे। न ही उन्होंने मसीह को देह में रहते हुए देखा था। परन्तु दूसरों की शिक्षा को सुनकर शीघ्र ही वे विश्वास ले आए होंगे (प्रेरितों 6:7)।

अपने पिछले दिनों में वे दुखों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे थे। यह यरूशलेम की कलीसिया पर सताव हो सकता है (प्रेरितों 8:1; 12:1–3)। यह आरम्भिक सताव इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने से इतने पहले होंगे कि पत्री के आरम्भिक प्राप्तकर्त्ताओं की शहादत नहीं हुई थी। मसीही लोगों को सताया जाना सम्भवतया 62 ईस्वी में यीशु के भाई याकूब की अन्यायपूर्ण हत्या के बाद थम गया होगा। यह पौलुस के मनपरिवर्तन के कई साल बाद हुआ (प्रेरितों 9) और हो सकता है कि यह कोई इक्का दुक्का घटना हो।

आयत 33. तौभी इन पाठकों की वास्तव में अपने दुख में दूसरों के साथ सहिभागिता (*koinōnos,* "भागीदार होना") थी। यह सहभागिता उन्होंने उनके साझी होकर की, जिनकी दुर्दशा की जाती थी और उनकी सहायता की। यह धन्य सामरी वाली कहानी के याजक और लेवी से कितना अलग था (लूका 10:25–37)! क्या कुछ यहूदी याजक यीशु के दृष्टांत को सुनकर इतने प्रभावित हुए होंगे कि उन्हें अपनी कमज़ोरी का पता चल गया और इस कारण वे मसीह में परिवर्तित हो गए (प्रेरितों 6:7)? आरम्भिक मसीही लोगों ने इस कहानी को आगे उन्हें होगा।

इब्रानियों के पाठक तमाशा भी बने थे। "तमाशा" के लिए क्रिया शब्द *theatrizō* का एक रूप है, जिसका अर्थ "तमाशा" बनाना और संज्ञारूप शब्द *theatron* है जिससे हमें "थियेटर" शब्द मिला है। यह शब्द रोमी अखाड़े का सुझाव देता है जहां पर कैदियों को लोगों की भीड़ के देखने के लिए रखा जाता था। प्रेरितों का वर्णन करते हुए ("तमाशा ठहराया"; 1 कुरिन्थियों 4:9) पौलुस ने इसी शब्द के एक रूप (*theatron*) का इस्तेमाल किया। उन्होंने **निंदा** सही थी, जिसमें नाम ले-ले कर मज़ाक उड़ाना भी शामिल होगा। क्लेश अलग अलग प्रकार के दुख और तकलीफ़ें थीं। यदि पत्री के आरम्भिक पाठकों का अपने साथी यहूदियों द्वारा मज़ाक उड़ाया गया था तो क्या समाज द्वारा उनका बहिष्कार किया गया था?

आयत 34. उनके सहभागिता करने के प्रमाण के रूप में उनके दुखी होने को याद किया गया है (सहानुभूति NASB- अनुवादक) (*sumpatheō*) को याद किया गया है। KJV और NKJV में सिकंदरिया के क्लेमैंट के साथ मेल खाते हुए "करुणा" है। "सहानुभूति" अत्यधिक तनाव के समय दिखाना कठिन हो सकता है परन्तु यह मसीही सोच का उचित संकेत है।

याजकों को तो कैद में डाले जाने का गम्भीर खतरा नहीं होगा, परन्तु अन्य मसीही लोगों को था। उन दिनों में कैदियों के लिए खाना ले जाना भी बड़ा जोखिम भरा काम होता था, परन्त इन मसीही लोगों ने यह काम किया था। इस प्रकार की "सहभागिता" उस संगति का भाग हो सकती है जिसका आरम्भ प्रेरितों 2:42, 44-46; 4:34, 35 में हुआ। इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय सताव कम हो गया था और मसीही लोगों को थोड़ी देर के लिए राहत मिली थी।

कठिन तो लग सकता है परन्तु लेखक ने उन्हें याद दिलाया कि उन्होंने अपनी सम्पत्ति आनन्द से लुटने दी। हम इसे असाधारण प्रतिक्रिया मान सकते हैं परन्तु विश्वासी लोग सांसारिक वस्तुओं की हानि आनन्द से उठा सकते हैं। सताव के समयों में हिंसक भीड़ आकर भाग जाने वालों की सम्पत्ति लूट सकती है। इन भाइयों ने समझ लिया था कि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति से नहीं होता है (लूका 12:15)। आनन्द से ऐसी हानि उठाने वालों ने मन्दिर की सुन्दरता और शान के लिए अपनी भावना पर भी काबू पा लिया होगा। अपनी समस्याओं के बजाय उन्होंने विश्वास में एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरने वाली सम्पत्ति की ओर आगे को देखा। उन्होंने लूका 6:23 में यीशु की कही बात को पूरा किया: "उस दिन *आनन्दित होकर* उछलना, क्योंकि देखो, तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है।"

यीशु ने समझाया कि उसके चेले कैदियों के पास जाएं (देखें मत्ती 25:35, 36)। यहूदिया के पवित्र लोगों ने कैद से छूटने वालों के प्रति हमदर्दी दिखाई (प्रेरितों 4:23), क्योंकि उन्हें पता चल गया था कि "यदि एक अंग दुख पाता है तो सभी अंग उसके साथ दुख पाते हैं ..." (1 कुरिन्थियों 12:26)। डाकू उनके सामान को तो लूट सकते थे परन्तु वे जानते थे कि कोई मनुष्य उन से उनकी अनन्त महिमा को नहीं छीन सकता। उन्होंने अपने लिए "स्वर्ग में धन" जमा करा लिया था (मत्ती 6:20) और अनन्तकाल में उत्तम सम्पत्ति में भरोसा रखा था (इब्रानियों 11:10, 16; 1 पतरस 1:4)। "मसीही व्यक्ति के मन की पहचान यह होनी चाहिए कि अपने आप से बाहर उसके पास कुछ नहीं है जिसे वह मुस्कुराते हुए अलविदा न कहें।"[76] यह भाई सीख रहे थे कि उनसे नहीं डरना है जो केवल शरीर को घात कर सकते हैं (मत्ती 10:28)।

आयतें 35, 36. इब्रानियों की पुस्तक के प्राप्तकर्त्ताओं की सम्पत्ति चोरों या हाकिमों ने छीन

ली थी। लेखक ने उन्हें आने वाले उनके बड़े प्रतिफल को ध्यान में रखते हुए संसार को बेकार मानने के लिए प्रोत्साहित किया। जो मसीही ऐसा कर सकता है वह अपने विश्वास को कभी छोड़ेगा नहीं। वह इसे सबसे कीमती सम्पत्ति के रूप में पास रखेगा। याद रखें कि "[हमारे लिए] स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल" है (लूका 6:23); यहां इस्तेमाल होने वाली अभिव्यक्ति, उसका प्रतिफल बड़ा है (आयत 35), वर्तमानकाल में है।

लेखक ने अपने पाठकों को ऐसे काम करने का आग्रह किया जैसे वे पहले करते थे और स्थिरता से मसीह की सेवा करते रहने को कहा। उसने उस ढंग के लिए जिसमें हम परमेश्वर के सिंहासन तक पहुंच सकते हैं हियाव (*parrēsia*) शब्द का इस्तेमाल किया (4:16; 10:19)। यहां भगौड़ा एक कायर सिपाही के भागते समय, भारी हथियारों को फैंक देने के संकेत को देखा जा सकता है। ऐसे कार्य को विशेषकर अपमानजनक माना जाता था। पौलुस ने सिपाही के इसी उदाहरण का इस्तेमाल किया (इफिसियों 6:12-17)। मुश्किल का सामना दिलेरी से करना एक बड़ी खूबी है, यदि यह सच्चे विश्वास पर आधारित हो (इब्रानियों 11:1)। यह आत्म-विश्वास नहीं, बल्कि परमेश्वर में सचमुच में भरोसा रखना है।

दृढ़ होना आवश्यक है, नहीं तो व्यक्ति का उसका प्रतिफल नहीं मिलेगा। धीरज (*hupomonē*) या "सहनशीलता" (आयत 36; NASB) का अर्थ परीक्षाओं के समय दृढ़ रहना है। "क्लेशों में भी ... धीरज" रखा जा सकता है (रोमियों 5:3)। व्यक्ति के विश्वास की परख ही होती है जिससे धीरज आता है (याकूब 1:2, 3)। हम जानते हैं कि हमारे क्लेश अनन्त प्रतिफल के सामने कुछ भी नहीं हैं (2 कुरिन्थियों 4:17)। हमारा काम परमेश्वर की इच्छा को पूरी करते रहना है क्योंकि न कर पाना, छोड़ देने या अपने विश्वास को छोड़ देने से परमेश्वर की ओर से प्रतिज्ञा का फल न पाना होगा। इन मसीही लोगों के लिए इन दुखों को सहने का अर्थ आवश्यक नहीं था कि परमेश्वर की इच्छा हो, परन्तु यह उसकी इच्छा थी कि उनके धीरज के लिए वह उन्हें बड़ा प्रतिफल दे।

आयतें 37, 38. ये आयतें स्पष्टतया मसीह की बात करती हैं, पुराने नियम के धर्मशास्त्र में यह स्पष्ट नहीं था। तो क्या यह आयत फिर उसके लिए हो सकती है? इसके अलावा यहां आने वाला किसे कहा गया है? आयतें 37 और 38 के वाक्यांश यशायाह 26:20 और हबक्कूक 2:3, 4 से लिए गए हैं। वचन दिखाता है कि नबी छुटकारे की राह देख रहा था। इब्रानियों के लेखक ने "आने" पर जोर देने के लिए LXX की शब्दावली को तरतीब दी।

बहुत से लेखक इस "आने" को मसीह के द्वितीय आगमन के रूप में देखते हैं। परन्तु यह सही नहीं हो सकता, न तो पुराने नियम के नबी के लेखों के सम्बन्ध में और न यहां इब्रानियों के। प्रेरित यह नहीं सिखाते थे कि मसीह का प्रकट होना उनके समय में होने वाला है। 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-3 के अध्ययन से पता चलता है कि पहली सदी में उसके द्वितीय आगमन की राह देखना आम नहीं था। ऐसा क्यों मान लिया जाता है जैसे कि प्रभु की वापसी के समय के सम्बन्ध में पौलुस का नये नियम के अन्य लेखकों के साथ झगड़ा हो? वे आपस में पूरी तरह से सहमत थे, क्योंकि शीघ्र ही किसी भी समय द्वितीय आगमन में प्रभु ने प्रकट नहीं होना था।

याद करें कि नबी आम तौर पर कुछ लोगों को दण्ड देने और दूसरों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर के आने की बात कहते थे। उदाहरण के लिए, आमोस 4:12 में परमेश्वर इस्राएल को

दण्ड देने के लिए आ रहा था। उसने नबी के ऊपर प्रकट किया कि कसदियों से छुटकारा मिलने वाला था और, चाहे लोगों को यह बहुत दूर लग सकता था परन्तु परमेश्वर देर नहीं कर रहा था। प्रेरितों 17:30, 31 में पौलुस ने घोषणा की कि परमेश्वर ने यीशु के आने के लिए एक दिन ठहराया है। इस प्रतीक्षा के दौरान धर्मी जन के लिए विश्वास से जीवित रहना आवश्यक है चाहे जो भी हो जाए। रोमियों 1:17 में विश्वास पर अपने शोधपत्र का परिचय देने के लिए पौलुस ने इसी आयत का इस्तेमाल किया। इब्रानियों तथा पौलुस के लेखों ने उस "जीवन" को पाने के लिए जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है, वफ़ादार बने रहने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

नया नियम यह स्पष्ट कर देता है कि यीशु के हर "आने" की बात उसके द्वितीय आगमन की बात नहीं है। मत्ती 24:27 "मनुष्य के पुत्र के आने" की बात करता है परन्तु यह द्वितीय आगमन की बात नहीं हो सकती बल्कि यहां पर मसीह उसे ठुकराने के लिए यरूशलेम को अविश्वासी होने का दण्ड देने आ रहा था। अगली आयत में उसने "लोथ" की बात की, क्योंकि यरूशलेम के लोगों में उसने मुर्दा विश्वास पाया था। उनकी परिस्थिति की यह तस्वीर आगे और भी स्पष्ट हो गई। यही "लोथ" थी जिसके गिर्द लूट और नष्ट करने के लिए रोम के "गिद्ध" इकट्ठा हुए थे। प्रभु ने उस समय दण्ड के लिए "अचानक" आना था, जैसे पुराने नियम में नबियों के द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं के बाद परमेश्वर आम तौर पर आता था।

जब लेखक ने यीशु के अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है, जब कि आने वाला आएगा (आयत 37) की बात की, तो निश्चय ही वह यरूशलेम के आने वाले विनाश की बात कर रहा था, जिसमें यीशु उस जाति को दण्ड देने के लिए "आया" क्योंकि लोगों ने उसे ठुकराया और क्रूस पर चढ़ाया था (आयत 39 पर चर्चा देखें)। परन्तु उसने अपने धर्मी पवित्र जनों को छुड़ाने की प्रतिज्ञा की थी। एक अर्थ में, महासभा और स्तिफनुस पर आरोप लगाने वाले गलत नहीं कह रहे थे कि यीशु ने अपने मन्दिर को नष्ट करना था (प्रेरितों 6:13, 14)। उनका दण्ड और मसीही विश्वासी का बचाव पुराने नियम के अर्थ में मसीह का कइयों को दण्ड देने और शेष को छुड़ाने के लिए "आना" था।

हम ने इस छुटकारे को आयत 37 से जोड़ दिया है; इसे आयत 38 से भी जोड़ा जाना चाहिए। हबक्कूक 2:4 का उद्धरण कि मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, मूलतया कसदी राज्य की पराजय और उससे यहूदी दुखों के खातमे की बात थी। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक में ऐसी ही प्रासंगिकता के साथ इसका उपयोग उपयुक्त था।[77] हबक्कूक कह रहा था कि परमेश्वर अपने लोगों का पलटा लेने के लिए और घमण्डियों को दण्ड देने के लिए आएगा। उसी प्रकार से यरूशलेम के गिरने के दौरान विश्वासियों को दुख सहने से बचाया गया था। हबक्कूक की भविष्यवाणी बिल्कुल इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के उद्देश्य से मेल खाती है। "पुराने नियम के वचन को इसके मूल अर्थ को खराब किए बिना नये सिरे से व्यवस्थित करने की यह स्वतन्त्रता नये नियम की लेखकों की विशेषता है जो जानते थे कि वे पवित्र आत्मा के प्रवक्ता हैं।"[78]

यदि "धर्मीजन" यानी मसीही व्यक्ति पीछे हट जाए, तो परमेश्वर उसे अपनी आशिषें नहीं देगा। वह अविश्वासी व्यक्ति से प्रसन्न न होगा। पत्री के प्राप्तकर्त्ताओं के लिए या तो विश्वास से चलने या यहूदीवाद में लौट जाने की पसन्द थी।

आयत 39. यदि वे यरूशलेम को लौट जाते तो परिणाम नाश होना था। अपने प्राण को बचाने के लिए विश्वास में बने रहना आवश्यक है। उसने कहा कि कुछ लोग पुरानी वाचा में लौट गए थे, परन्तु उसे अपनी पत्री के पाठकों में भरोसा था कि वे नहीं लौटेंगे। हटने वाले लोग अपने विश्वास को नहीं रख सकते कि अपने प्राणों को बचाएं। यदि अपने विश्वास को खोना असम्भव होता तो यह ताड़ना क्यों दी गई? यह वाक्यांश यरूशलेम के गिरने के सम्बन्ध में कही गई यीशु की बात से मेल खाता है कि "अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे" (लूका 21:19)। ऐसे विश्वास की आवश्यकता है, जो दृढ़ रहे। यह इब्रानी मसीही छोड़कर नहीं जा सकते थे। पवित्र नगर से दूर सुरक्षा की ओर बहुत लोग यहूदीवाद में से यीशु के निर्देशों पर चलते थे, आज हमें उसी दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है।

लेखक ने एक बार फिर से हम कहते हुए अपने आपको पाठकों के साथ मिलाया। ऐसा उसने 2:3 की तरह उन्हें वफ़ादारी से रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किया। मसीही व्यक्ति के लिए अपनी वफ़ादारी के साथ रहना आवश्यक है यानी जब तक वह जीवित रहे तब तक वफ़ादार बने रहना आवश्यक है। हर कोई जो अपने विश्वास को बनाए रखता है वह "प्राणों को बचा" (*psuchē*) सकता है। यदि *psuchē* का अनुवाद "जीवन" किया जाए तो यह कथन यहां दी गई व्याख्या के साथ बेहतर मेल खाता है; परन्तु यीशु की शिक्षा को मानते हुए नगर से बचने वाले मसीही लोगों ने जब तक जीवित रहना था तब तक अपने प्राणों को बचाना था।

यदि कोई यहूदी मसीही अपने साथी मसीही लोगों को रोमी सेना के अचानक नगर से वापस आने पर यरूशलेम से जाता देख ले तो वह उनके साथ जा सकता था परन्तु फिर "पीछे हट" सकता था। यहूदीवाद के गढ़ में वापस जाने का अर्थ मत्ती 24 में मसीह के वचन को ठुकराना था। परमेश्वर को यीशु द्वारा दिए गए विश्वास के टैस्ट को न मानने वाला व्यक्ति पसन्द नहीं होना था। मत्ती 24:13 कहता है, "परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।" अपने संदर्भ में इस बात का अर्थ व्यक्ति के जीवन के अन्त या समय के अन्त के लिए नहीं हो सकता; यह केवल यरूशलेम के अन्त के लिए हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि आयत 39, मत्ती 24 में कही यीशु की बात के जैसी ही है। नगर को छोड़कर पेला (प्राचीन यूनानी नगर) में जाकर विश्वासी व्यक्ति अपने जीवन को सुरक्षित करके अन्त तक वफ़ादारी दिखा सकता था जिससे उसे अनन्त जीवन मिलना था। धर्मी व्यक्ति के लिए अपने प्राण के साथ साथ अपने जीवन को बचाने के लिए विश्वास से चलते रहना आवश्यक था। "नाश" में उसके जीवन की सम्भावित हानि हो सकती है परन्तु इसका अर्थ निश्चय ही उसकी स्वतन्त्रता की हानि था। जीवन में उसे जो कुछ प्रिय था वह यरूशलेम के साथ साथ नष्ट होने वाला था। ऐसी परिस्थितियों में कोई मसीही भला उस नगर में क्यों रहता?

इस अध्ययन को हमें अध्याय 11 तक ले जाने वाले, उद्धार दिलाने वाले विश्वास के विषय के परिचय के रूप में देखा जा सकता है। वहां हमें उद्धार दिलाने वाले विश्वास के काम करने के अर्थ और विस्तार के साथ साथ विश्वास के बड़े बड़े उदाहरण मिलेंगे।

## और अध्ययन के लिएः
## "चिह्न" और "आने वाला दिन"

मत्ती 24 में अपने प्रेरितों के साथ यीशु की बातचीत में दिए गए कई "चिह्न" नगर के गिरने का कारण बताती कई घटनाओं की भविष्यवाणी थी। इन्हें विश्वासियों द्वारा "देखा" जा सकता था, जिन्हें परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रेरितों से अतिरिक्त व्याख्या मिली थी। विश्वास के द्वारा उन्होंने उन चिह्नों के पूरा होने को समझ लिया जिनकी भविष्यवाणी यीशु ने की थी। यीशु द्वारा बताई गई घटनाएं अधिकतर 66 ईस्वी से 70 के बीच में घट गईं, जिनमें भूकम्प जैसी कुछ घटनाएं 50 ईस्वी के आरम्भिक वर्षों में घटीं (मत्ती 24:7)। वे उस दिन को पहचान सकते थे, का अर्थ यह है कि चिह्न दिए गए थे और "समझ रखने वाले पुरुषों और स्त्रियों को दिखाई दिए थे।"[79] स्वाभाविक ही है कि अपनी स्वयं की मृत्यु के दिन को निकट आते देख व्यक्ति को साथी मसीही लोगों के साथ इकट्ठा होना चाहिए (देखें इब्रानियों 10:25), परन्तु यहां यह नहीं कहा गया।

इसके उलट मत्ती 24:15, 16 में एक अजीब चिह्न दिया गया है: "सो जब तुम उस उजाड़ने वाली वर्णित वस्तु को जिस की चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, जो पढ़े, वह समझे। तब जो यहूदियों में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं।" समस्या मरकुस 13:14 में फिर से बताई गई है: "सो जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को जहां उचित नहीं वहां खड़ी देखो (पढ़ने वाला समझ ले), तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएं।"

"उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" क्या थी? लूका ने थोड़ा और समझाया: "जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है। तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं, और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएं; और जो गांवों में हों वे उस में न जाएं" (लूका 21:20, 21)। यरूशलेम को घिरे और इसके शत्रुओं को "देख" कोई नगर से कैसे भाग सकता था? दूसरे लोग इसमें कैसे आ सकते थे? मत्ती 24:22 में यीशु ने एक संकेत दिया: "और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे।" यहां पर प्रत्यक्षदर्शी जोसेफस ने हमारा बड़ा काम किया। उसने कहा कि रोमी सेना, यरूशलेम में विद्रोह को दबाने के अपने पहले काम पर, "संसार में बिना किसी कारण के, नगर से हट गई।"[80]

लगभग 30 वर्ष बाद लिखने के बावजूद इस पूर्व फरीसी को कोई कारण समझ नहीं आया कि सेसियस ने अपने सिपाहियों को वापस क्यों बुला लिया, परन्तु हम वह जानते हैं जिसका जोसेफस को पता नहीं था: परमेश्वर को अपने चुने हुए लोगों का ध्यान था और उसने दिन कम कर दिए थे। इससे मसीही लोगों को बच जाने का अवसर मिल गया। "कलीसिया के इतिहास के पितामह" यूसबियुस ने लिखा है कि मसीही लोगों के "पूरे समूह" को उन्हें दिए गए "ईश्वरीय प्रकाशन" के कारण बचने की अनुमति दी गई थी।[81]

यरूशलेम के गिरने के चिह्न बताने के विपरीत यीशु ने आगे यह कहते हुए कि "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता" (मत्ती 24:36), अपने द्वितीय आगमन के प्रश्न का उत्तर दे दिया। इस बात को यरूशलेम के

गिरने के लिए लागू नहीं किया जा सकता था, नहीं तो वे सभी चिह्न जो उसने अभी अभी दिए थे, बेकार होने थे। यह इस बात का सुझाव देता है कि "उस दिन का निकट" आना, यहूदिया के यहूदियों के लिए विशेष महत्व का था और यह पत्री उस इलाके के लोगों के एक समूह को लिखी गई थी। फिलिप्पियों की पत्री की तरह यह "अध्यक्षों और सेवकों" के नाम नहीं (1:1), बल्कि कलीसिया के भीतर एक समूह को लिखी गई थी, जिन्हें अपने प्राणों और शरीरों की रक्षा करने के लिए अपने आत्मिक अध्यक्षों की आज्ञा माननी थी (इब्रानियों 13:17)।

## प्रासंगिकता

प्रतिबिम्ब या असली वस्तु ( 10:1 )

पाक कला की पुस्तक पढ़ने के बजाय भर पेट खाना खा लेना बेहतर है। आदमी के लिए पत्नी और बच्चों के घर में न होने तब उनकी तस्वीर का होना अच्छा है, परन्तु उनके साथ रहते हुए ऐसा नहीं होता। अपने प्रियजनों से दूर रहते समय वास्तव में हम उनके साथ सुख दुख बांट नहीं सकते हैं। हमें "प्रतिबिम्ब" का आनन्द उतना नहीं आता जितना वास्तविक वस्तुओं का आता है। तम्बू और मन्दिर को वास्तविक वस्तु के साथ कभी मिलाया नहीं जा सकता। चढ़ाए गए हर पशु की कुर्बानी पापी के हृदय में और अमिट रूप में दोष के भार को जला देती थी; मसीह का सिद्ध बलिदान हमारे प्राणों से दोष को मिटा देता है।

कर्मकाण्डी बलिदान को परमेश्वर ने नहीं चाहा था ( 10:1 )

परमेश्वर ने वास्तव में कभी जानवरों के बलिदान नहीं चाहे; इब्रानियों की पुस्तक में केवल यही सबक नहीं है। जब राजा शाऊल शमूएल की राह देखते देखते थक गया तो उसने बिना अनुमति के आगे बढ़कर परमेश्वर को अपनी भेंट चढ़ा दी थी। उसके कार्य से उसके लोग प्रभावित हुए हो सकते हैं। थोड़ी देर के बाद जब शमूएल वहां पर पहुंचा तो उसने राजा को इन शब्दों के साथ डांट लगाई: "क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन मानना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है" (1 शमूएल 15:22)। भजन संहिता 51:16, 17 में दाऊद ने इसी सच्चाई को दोहराया था: "क्योंकि तू मेलबलि में प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता; होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता। टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।"

दयालु होना परमेश्वर की नज़र में बलिदान चढ़ाने से कहीं उत्तम है (होशे 6:6; KJV)। यीशु द्वारा पुराने नियम की इस शिक्षा को कम से कम दो बार उद्धृत किया गया (मत्ती 9:13; 12:7)। व्यवस्था में भी बलिदान किसी के परमेश्वर के लिए प्रेम को दिखाने के लिए थे, जैसे वह कह रहा हो, "मैं तेरा आदर और आराधना इस प्रकार से करना चाहता हूं।" इसी प्रकार नये नियम की हमारी आराधना हमारे मनों के दीन हुए बिना केवल दिखावटी और कर्मकाण्ड से बढ़कर होनी आवश्यक है। हमारी आराधना हमारे मन से होनी आवश्यक है (मत्ती 15:8, 9; इफिसियों 5:19)। यदि हमारी शिक्षा गलत है तो यीशु ने कहा कि हमारी आराधना गलत

है (मत्ती 15:9)। सच्ची शिक्षा को सीखने और सिखाने की नाकामी इस बात का संकेत है कि मन साफ़ नहीं है।

इसके अलावा बलिदानों में परमेश्वर का एक उद्देश्य था। उसने लोगों से अपने पापों के लिए कुछ ज़िम्मेदारी का अनुभव करने की इच्छा की होगी। सम्पत्ति (पशु और अनाज) की कीमत यह दिखाती थी कि पाप की कीमत चुकानी आवश्यक है। ऐसी भेंटें वास्तव में पाप के लिए प्रायश्चित नहीं हो सकती थीं, परन्तु वे परमेश्वर के लोगों पर प्रायश्चित की आवश्यकता का प्रभाव बनाती थीं।

### पाप से कोई बचाव नहीं ( 10:1, 3 )

वार्षिक बलिदानों से पाप दूर नहीं हुआ, यानी कोई "सिद्ध" नहीं हो सका, जिसका अर्थ "पूर्ण रूप में पाप से मुक्त" होना है। यहूदी लोग वार्षिक रूप में पाप का स्मरण करते थे, जिस पर प्रायश्चित के दिन बल दिया जाता था (आयत 3)। अनुवादित संज्ञा शब्द "स्मरण" (*anamnēsis*) यहां केवल एक बार और नये नियम में प्रभु भोज के विवरणों में मिलता है (लूका 22:19; 1 कुरिन्थियों 11:24, 25)। यहूदियों के लिए वार्षिक दिन पाप को स्मरण करने का दिन था जबकि मसीही लोगों के पास उसे साप्ताहिक रूप में स्मरण करने के लिए दिया गया है जिसने अपना लहू बहाकर पापों की क्षमा दिलाई है (मत्ती 26:28)। पाप के साथ प्रभावी ढंग से केवल यीशु ने निपटा है।[82]

### बैलों और बकरों का लहू बचा नहीं सकता ( 10:4 )

मसीह के लहू का कोई और विकल्प है ही नहीं। या तो इसके द्वारा हमारा उद्धार होता है या नहीं। यदि नहीं तो मसीहियत व्यावहारिक धर्म नहीं है। यदि होता है तो यह स्वर्ग का एकमात्र मार्ग है। यदि मसीह मुर्दों में से जी उठा तो अन्य हर धर्म अपर्याप्त है। वह घटना हमारे विश्वास की नींव है; यदि ऐसा है तो और किसी भी बात का महत्व नहीं है। रेमण्ड ब्राउन ने इसे इस प्रकार से कहा है:

> अपने लेखक के शब्द का प्रयोग करें तो बैलों और बकरों के लहू के लिए पापों को दूर करना *असम्भव* है और मनुष्य के लिए इस्लाम के पांच स्तम्भों के द्वारा, या सन्यास के हिन्दू संकल्पों के द्वारा या बौद्ध विधियों के द्वारा या सिखों के आत्म-मुक्ति के ढंगों से अपना उद्धार पाना मनुष्य के लिए उतना ही असम्भव है।[83]

यह सोचना बेतुका है कि मसीह का बलिदान केवल कुछ लोगों को ही छुड़ाएगा जबकि दूसरों को नहीं। मनुष्य को अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि वह अपने पाप के द्वारा दोषी ठहराया गया है। यीशु *ही* "उद्धारकर्त्ता" है जैसा कि उसके नाम से भी संकेत मिलता है। वह उन्हें जो उत्सुक्ता से उसकी राह देखते हैं परम उद्धार दिलाने के लिए दोबारा आ रहा है (9:28)।

### स्वयंसेवकों की सेना ( 10:8-10 )

राजा जेम्स के समय में युद्ध में सेना की अगुआई करने वाले प्रधान अगुवे के लिए

''कप्तान'' (इब्रानियों 2:10; KJV) शब्द का इस्तेमाल किया जाता था। यीशु हमारा ''कप्तान'' (*archēgos*), ''[हमारे उद्धार का कर्त्ता]'' है। अपना काम करने के लिए अपनी ''सेना'' की अगुआई में उसने सब बातों में सिद्ध नमूना ठहरा दिया। उसने स्वयंसेवक होने का नमूना ठहरा दिया। उसने अब तक के दिखाई देने वाले संसार के सबसे बड़े काम को करने के लिए स्वर्ग की सारी महिमा, आदर, सम्पत्ति और सामर्थ को स्वेच्छा से बलिदान कर दिया। 2 कुरिन्थियों 8:9 कहता है, ''तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।'' उसकी सम्पत्ति आत्मिक है जैसे उसके उस स्वेच्छा से किए बलिदान के द्वारा अब हमारी है।

मसीही लोगों से स्वयं सेवक होने की अपेक्षा की जाती है। परमेश्वर हमारे लिए इसे असुविधाजनक बना सकता है जब हम उसकी आज्ञा नहीं मानते, परन्तु वह ज़बर्दस्ती नहीं करता। जो भी चाहे वह आए। प्रकाशितवाक्य 22:17 कहता है, ''जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंत मेंत ले।'' बिना किसी आर्थिक लाभ की सोच के पौलुस उन देशों में गया जहां सुसमाचार सुनाया नहीं गया था और जहां कोई और प्रेरित पहले नहीं गया था। जब भाइयों द्वारा उसकी सहायता नहीं की गई तो उसने अपने निर्वाह के लिए काम किया (फिलिप्पियों 4:10, 11, 16–19)। उसने दिखाया कि लेने से देना धन्य है और आवश्यकता पड़ने पर अपने हाथों से परिश्रम करना आवश्यक है (प्रेरितों 20:33–35)। कई बार प्रभु ने उसे बताया कि कहां जाना है, परन्तु अन्य समयों में उसने अपनी ओर से पहल की (प्रेरितों 15:36; 16:6–10)। वह हर हाल में खोए हुओं को जीतने को उत्सुक रहना था। जाने और सेवा करने की इच्छा वाली वह सोच भी यीशु ने दाऊद के प्रेरणा से कहे शब्दों में कही: ''मैं आ गया हूं, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं!'' (भजन संहिता 40:6–8)।

### यीशु ने पुरानी वाचा का क्या किया ( 10:9 )

''उठा देता है'' वाक्यांश एक ही यूनानी शब्द (*anaireō*) है जिसका अर्थ हो सकता है ''मिटाना'' या फिर ''बेरहमी से हत्या।'' बैतलहम के बच्चों की हत्या (मत्ती 2:16), यीशु की हत्या (लूका 23:32; प्रेरितों 10:39) और उसके ''विनाश'' के लिए ''जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:8) इसी यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया गया है।

इस सच्चाई से बढ़कर स्पष्ट बात नहीं हो सकती कि यीशु ने बलिदानों के लेवीय याजकाई के प्रबन्ध को पूर्ण रूप में पूरा कर दिया और अपनी नई वाचा उसके स्थान पर दे दी। मन्दिर को फिर से बनाने का अर्थ पुराने नियम के बलिदानों को बहाल करना होगा। केवल इसी वचन को ध्यान में रखकर कोई विश्वासी यरूशलेम में एक और मन्दिर खड़ा करना क्यों चाहेगा?

### पवित्र किया जाना जिसकी अनुमति देता है ( 10:10 )

बिना पवित्र किए व्यक्ति प्रभु को देख नहीं सकता (इब्रानियों 12:14), परन्तु अपेक्षित पवित्र किए जाए (पवित्रकरण) के साथ, व्यक्ति परमेश्वर के सिंहासन पर पहुंच सकता है। पुरानी वाचा केवल कर्मकाण्डी शुद्ध किए जाने के लिए कहती है परन्तु नई वाचा में हमारे पास

परमेश्वर के सेवा करने की नई प्रतिबद्धता वाली पूरी और सम्पूर्ण शुद्धता है। पवित्र किए जाने को पाने और पाए रखने का लक्ष्य, हर मसीही का हो (2 कुरिन्थियों 6:14—7:1)।

उपदेश के बीच एक उपदेश ( 10:1-18 )

इब्रानियों का लेखक 10:1-18 में दिए गए पहले विचारों को ही दोहराकर उनका इस्तेमाल कर रहा था, पर क्या यह सिखाने के ढंग का भाग नहीं है? जो कुछ सिखाया गया है उसका सार आम तौर पर सहायक होता है, प्रासंगिकता बनाने से पहले भी। इन आयतों में लेखक ने यही किया।

आयत 18 के बाद शिक्षाएं आरम्भ हो जाती हैं, चाहे पत्री में पहले ही बीच-बीच में शिक्षाएं दी गई हैं (2:1-3; 3:12, 13; 5:11-14; 6:11, 12)। किसी सबक के व्याख्यात्मक भाग में भी अन्त में अन्तिम नाटकीय और भावनात्मक अपील की तैयारी के लिए बीच बीच में शिक्षा सहायक हो सकती है। किसी उपदेश की समाप्ति ऐसे ही होनी चाहिए! लेखक ने बिल्कुल यही किया।

बैठा हुआ, न कि खड़ा ( 10:11, 12 )

बिना ईश्वरीय अनुमति के परमेश्वर की उपस्थिति में कोई बैठता नहीं था। तम्बू या मन्दिर में सेवा करने वाले याजक बैठ नहीं सकते थे। उन्हें अपने कर्त्तव्यों को खड़े रहकर ही निभाना होता था। खड़े रहना इस बात का संकेत था कि उनका काम कभी पूरा नहीं हुआ और इस बात की ओर संकेत करता था कि पापों की क्षमा उनके प्रयासों के द्वारा प्राप्त नहीं होती। इन याजकों के विपरीत मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ स्वर्ग में बैठ सका (1:3; 8:1; 10:11, 12; 12:2)। उसने उन सब को जो पवित्र किए गए हैं पूरी तरह से सिद्ध किया है (आयत 14), यह सब कर लेने के बाद, हमारे छुटकारे के लिए काम करते रहने की कोई आवश्यकता नहीं है।

न्याय अभी? ( 10:13 )

परमेश्वर पाप के परिणाम के रूप में हमें दु:ख देने के लिए हमारे जीवनों के दौरान दण्ड की अनुमति दे सकता है। इससे उसकी इच्छा के आगे और झुककर हमारे मन नरम हो जाने चाहिए (देखें 12:4-11)। हम वर्तमान कष्टों या किसी धर्मशास्त्री को हमें न्याय के अन्तिम दिन को भुलाने का कारण न बनने दें। न्याय किसी के बुरे कामों को याद करना नहीं होगा क्योंकि मसीह में उनकी क्षमा हो चुकी है। परमेश्वर की दृष्टि में क्षमा करने का अर्थ भुला देना भी है।

क्रूस पर मसीह की मृत्यु के द्वारा संसार को दोषी ठहराया जाता है, परन्तु यह दोषी ठहराना अन्तिम न्याय से बिल्कुल अलग है। मसीह की मृत्यु के द्वारा शैतान का न्याय पहले ही हो चुका है (यूहन्ना 12:23-32), परन्तु किसी कारण अभी भी उसे परमेश्वर के लोगों को भरमाने और दुखित करने की अनुमति है। शायद परमेश्वर ने उसे आग की झील में उसके अन्तिम विनाश होने तक हमें भरमाते रहने की उसे अनुमति दी है (प्रकाशितवाक्य 20:10)।

आत्मा हमारी गवाही कैसे देता है ( 10:15 )

आत्मा परमेश्वर के लिखित वचन की गवाही के द्वारा "साक्षी देता," या "गवाह"

(KJV) का काम करता है। उसके वचन और प्रतिज्ञाएं मसीही लोगों को आश्वस्त करने वाले हैं। बाइबल में पवित्र आत्मा की ओर से हमें दी गई सब गवाहियां होने के बावजूद यह मांग करना कितना बड़ा ढीठपन है कि परमेश्वर हमें सीधे गवाही देता रहे! यह तो गुस्ताखी की हद है, और बाइबल में इसका कोई आधार नहीं है। आज परमेश्वर से "चिह्न" पाने की कोई आवश्यकता नहीं है। "जीवन और भक्ति" के लिए हमें जो भी आवश्यकता है, वह बाइबल में पहले से है (2 पतरस 1:3)।

"*पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है* अभिव्यक्ति का अर्थ सीधे हमें देने के बजाय हमारे सम्बन्ध में गवाह के अर्थ के रूप में समझा जा सकता है।"[84] जो कुछ बाइबल में लिखा है वह वही है जो पवित्र आत्मा हमारे साथ बात कर रहा है और जो कुछ परमेश्वर ने कह दिया है उसे दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

यदि कोई पवित्र आत्मा की सच्ची गवाही सुनना चाहता है, न कि उसे भरमाने वाले उसके अपने मन के विचारों को, तो उसे पवित्र शास्त्र में दिए गए आत्मा के वचनों को सुनना आवश्यक है।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि उद्धृत की गई भविष्यवाणी में पवित्र आत्मा ने पूरी तरह से यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को प्रेरणा दी थी या परमेश्वर ने पूरा पुराना नियम दिया था। इब्रानियों 10:15–17 में यिर्मयाह 31:33, 34 को उद्धृत किया गया है। 1 कुरिन्थियों 14:37 के अनुसार पौलुस का मानना था कि उसके वचन भी वैसी ही प्रेरणा से दिए गए थे। उसके लेख भी "पवित्रशास्त्र" (2 पतरस 3:16) थे। "सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र" यानी पुराना और नया दोनों नियम परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए हैं (2 तीमुथियुस 3:16)।

### अब पापों का स्मरण नहीं किया जाता ( 10:18 )

"पाप के परिणाम तिहरे हैं: कर्ज़ जिसके लिए क्षमा आवश्यक है, दासता जिसके लिए छुटकरा आवश्यक है, अलग किया जाना जिसके लिए मिलाप किया जाना आवश्यक है।"[85] पाप भयंकर है। यह हमें परमेश्वर और दूसरों के कर्ज़दार बना देता है, यह हमें आदत डाल देता या आदी बना देता है और अन्त में यह हमें अपने प्रियजनों और उनसे जिनसे हमें प्रेम करना चाहिए अलग कर देता है। पाप के कारण हुआ अलगाव इस जीवन में आरम्भ होकर अनन्तकाल तक बना रहता है।

पुराने बलिदान "पापों के कभी भी दूर नहीं कर" पाए (आयत 11), परन्तु अब परमेश्वर हमारे पापों को स्मरण नहीं करता है। प्राचीन समय में एक दरबारी राजा के दरबार में होने वाली सब बातों का लेखा-जोखा रखता था। उसे "याद दिलाने वाला" कहा जाता था। उसका काम राजा को पिछले निर्णयों और कार्यों का स्मरण दिलाना होता था। हमारे परमेश्वर का ऐसा कोई सेवक नहीं है; इसके बजाय उसके पास (शायद प्रतीकात्मक अर्थ में) केवल उसका इकलौता पुत्र बैठता है, जो पिता को अपने ही बलिदान का स्मरण करा सकता है, जिससे उसके हर बालक के लिए क्षमा उपलब्ध कराई गई।

### विश्वास का पूरा आश्वासन ( 10:22 )

हम अपने उद्धारकर्त्ता के साथ पूरे दिल से निष्ठा रख सकते हैं। विश्वास का पूरा आश्वासन

हमें मिल सकता है यदि हम इब्रानियों की पुस्तक की डॉक्ट्रिन की शिक्षाओं में पूरी तरह से मानें। जो विश्वास बाइबल की असल शिक्षा पर आधारित नहीं है वह अज्ञानता पर आधारित अन्धविश्वास ही है। स्वतन्त्र होने के लिए हमारे लिए सत्य को जानना आवश्यक है (यूहन्ना 8 :31, 32)। यदि किसी को समझ नहीं है कि मसीह की आज्ञा मानने के लिए उसे क्या करना आवश्यक है या वह यह आज्ञा क्यों मान रहा है तो उसे "विश्वास का पूरा आश्वासन" कैसे हो सकता है? पाप से स्वतन्त्रता पाने के लिए हमें "उस उपदेश के सांचे" को मानना आवश्यक है (रोमियों 6:17, 18)।[86] बेशक अपने आरम्भिक आज्ञापालन के बाद विश्वास में बढ़ा जा सकता है, वैसे ही जैसे संदेश को पढ़कर या सुनकर इब्रानियों की पुस्तक वाले ये भाई बढ़ रहे थे। बड़े विश्वास के लिए जगह रहती ही है; परन्तु जब तक पवित्र शास्त्र में दिए गए परमेश्वर के कारण और प्रकाशन पर आधारित नहीं है तब तक यह "पूरा आश्वासन" नहीं हो सकता।

हमें परमेश्वर के "निकट आना" आवश्यक है। विश्वास का यह आश्वासन हमें सही सोच के साथ आने के योग्य बनाता है, जिसके लिए पहले तो "सच्चे दिल" यानी "बिना दिखावे के" आना आवश्यक है। पौलुस लोगों की भीड़ के सामने निडरता से खड़ा हो पाया था क्योंकि वह जानता था कि उसका मन साफ है (प्रेरितों 23:1)। दूसरा विश्वास में निकट आने के लिए विश्वास करना आवश्यक है। बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया जा सकता (इब्रानियों 11:6)। तीसरा, इसके लिए "बिना दोष के" होना आवश्यक है। यह इसलिए हो सकता है क्योंकि हमारे दोषी मनों को यीशु के लहू के छिड़काव से शुद्ध किया गया है (आयत 22)। चौथा, हमें पानी के बपतिस्मे में यीशु में अपने विश्वास को सार्वजनिक रूप में दिखाते हुए अपनी निष्ठा को दिखाना आवश्यक है, जिसमें "धोया जाना" होता है (देखें प्रेरितों 22:16; 1 कुरिन्थियों 6:11; इफिसियों 5:26; तीतुस 3:5)।

धुली हुई देहें (10:22)

पुराने नियम में शरीर को शुद्ध करने के लिए जल का इस्तेमाल किया जाता था; नये नियम में इसका इस्तेमाल मन को पापों से शुद्ध करने के लिए किया जाता है (प्रेरितों 22:16; 1 पतरस 3:20, 21)। वास्तव में हर टीकाकार इस बात से सहमत है कि यहां "जल" का यही अर्थ है। बपतिस्मे के लिए समर्पण के कार्य के लिए व्यक्ति अपनी देह को मसीह के प्रति अपने पूरे और सम्पूर्ण समर्पण को दिखाने की अनुमति देता है। किसी दूसरे को उसे डुबोने की अनुमति देने की इच्छा मसीह की आज्ञा मानने की उसकी पूरी तैयारी का संकेत है। बपतिस्मा केवल सांकेतिक कार्य से बढ़कर है क्योंकि यहीं पर हम विश्वास के द्वारा मसीह में प्रवेश करते हैं (रोमियों 6:3, 4)। विश्वास के द्वारा ही हम "मसीह में बपतिस्मा [अनिश्चित भूतकाल–पूरा किया हुआ कार्य] " लेकर परमेश्वर की संतान बनते हैं (गलातियों 3:26, 27)।

किसी को भी यह सोचने से रोकने के लिए कि नये नियम वाला बपतिस्मा पुराने नियम के शारीरिक शुद्धिकरण जैसा ही है, पतरस ने स्पष्ट किया कि ऐसा नहीं है (1 पतरस 3:21)। उसने घोषणा की कि जिस प्रकार से नूह और उसका परिवार "जल के द्वारा बचाए गए" थे (3:20; KJV) उसी प्रकार हमें भी पानी के द्वारा उद्धार मिलता है। बपतिस्मे को नूह और उसके परिवार का जल में उद्धार का "दृष्टांत" (*antitupos*) कहा गया है। NASB में इसकी व्याख्या "जल

के द्वारा सुरक्षित लाए गए'' करके इस अवधारणा को नरम बनाया गया है (3:20)। परन्तु इससे आयत 21 का अनुवाद यह हो जाता है: ''तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं।'' 1 पतरस 3:21 पर किसी का विचार चाहे जो भी हो, पर यह कहता है, ''बपतिस्मा ... अब बचाता है।'' इसे मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा पाया जाता है। यह ''दृष्टांत'' नूह के उद्धार के ''रूप'' जैसा था न कि बपस्तिमे के कार्य में ''प्रतीकात्मक'' उद्धार।

कइयों ने यहां पर जल का अर्थ पवित्र आत्मा के प्रतीक के रूप में बताकर ''जल'' को ठुकरा दिया है। एन. बी. हार्डमैन जो फ्रीड-हार्डमैन यूनिवर्सिटी के प्रधान और अपने समय के ज़बर्दस्त प्रचारक थे, ने यह दावा करने के बेतुकेपन को दिखाया कि परमेश्वर के कहने का अर्थ वह नहीं था जो उसने कहा। यह पूछे जाने पर कि ''आपको नहीं लगता है कि यूहन्ना 3:5 में 'जल' का अर्थ 'जल' ही है?'' भाई हार्डमैन ने मज़ाक में उत्तर दिया, ''मुझे लगता है कि इसका अर्थ 'मट्ठा' है। यदि प्रभु ने जब 'जल' कहा और उसके कहने का अर्थ 'जल' नहीं था, तो मैं जो चाहूं इसका अर्थ बना सकता हूं, पर मुझे मट्ठा अच्छा लगता है।''

### आत्मिक प्रेम को बढ़ावा देना (10:24)

10:24 वाला ''प्रेम'' *agapē* प्रेम है, जिसका उल्लेख इब्रानियों की पुस्तक में केवल यहां और 6:10 में हुआ है।[87] हमारे इकट्ठे होने का उद्देश्य भाईचारे के प्रेम को बढ़ाना है (1 पतरस 2:17)। कुरिन्थुस की कलीसिया में जब कड़वाहट और झगड़ा, फूट जैसी चीज़ें आ गईं तो पौलुस ने लोगों को ''प्रीतिभोज'' बंद कर देने को कहा क्योंकि यह ''घृणा भोज'' बन गया था (1 कुरिन्थियों 11:17-22)। उसने संगति छोड़ने की सलाह कभी नहीं दी बल्कि भाइयों को वफादारी से प्रभुभोज में भाग लेते रहने को कहा (1 कुरिन्थियों 11:23-32)। इस मनाए जाने के महत्व से प्रेम फिर से पनपकर दोबार से बना सकता है, क्योंकि अपने पिता और हमारे प्रति अपनी वफादारी में उद्धारकर्त्ता द्वारा किए गए सारे काम पर अपनी उदासीनता और हठधर्मी से लज्जित हुए बिना सोचा नहीं जा सकता। सबसे बढ़कर यह घटना हमें प्रभु के दिन निरन्तर सभाओं में क्रूस की ओर खींचते रहने वाली होनी आवश्यक है। संगति भले कामों में हमें उकसाने के लिए परमेश्वर का एक ढंग है; हम में से कुछ ही लोगों में इसके बिना परमेश्वर की सेवा करते रहने की सरगर्म इच्छा होगी।

हम किसी को डांटकर या दोष लगाकर साथी मसीही लोगों को प्रेम करने के लिए प्रभावित नहीं कर सकते। हम ऐसा कुछ न तो करें और न कहें जिससे दूसरों का हमारी निष्ठा से भरोसा उठ जाए। इसके बजाय प्रोत्साहित करने वाली बातें कहें जिससे दूसरों का भरोसा परमेश्वर में और हम में भी बढ़े। ऐसा हम आराधना सभाओं में निरन्तर भाग लिए बिना नहीं कर सकते (10:25)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों को पहले एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने को नज़रअंदाज़ करने के बुरे प्रभावों के बारे में बताया था (3:13)।

### इकट्ठा हुई आराधना के समयों में संगति (10:25)

आयत 25 इस बात का संकेत देती है कि मसीही लोग एक संगति का भाग हैं, जैसे यरूशलेम

की आरम्भिक कलीसिया होती थी (प्रेरितों 2:42)। ''संगति'' का अनुवाद *koinōnia* से किया गया है, जिसका अर्थ दूसरों के साथ ''भागीदारी'' या ''साझेदारी'' है। 10:19 में इब्रानियों के पाठकों को ''हे भाइयो'' कह कर सम्बोधित किया गया था। कितना अद्भुत विचार है जिसमें एक परिवार के लोग होने का भाव मिलता है, जिसमें एक पिता, भाइयों और बहनों की तरह एक-दूसरे से प्रेम करने वाले लोग हैं। एडमिरल नेल्सन से इंग्लैंड के लिए युद्ध में उसकी सफलता की मुख्य बात पूछे जाने पर उसका उत्तर था, ''मुझे भाइयों के झुंड को आज्ञा देने का सुअवसर मिला था।'' कलीसिया की सफलता की मुख्य बात भी यही है।

मसीही लोगों को भाइयों के रूप में संगति की आवश्यकता है। हमें प्रोत्साहन की आवश्यकता है, जो हमें प्रार्थना और सिखाने के लिए संगति के द्वारा मिलता है। हमें आराधना सेवाओं में केवल इसलिए जाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए कि उसमें भाग लेने से हमें क्या मिल सकता है, बल्कि इसलिए भी कि हमें दूसरों की वफादारी में योगदान डाल सकें।

बड़ी महीनता से यह विधर्म पाया जाता है, ''हमें यीशु चाहिए, पर हमें कलीसिया नहीं चाहिए।'' जब इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी तब भी कुछ लोग स्पष्ट कह रहे थे, ''कलीसिया में जाने का कोई लाभ नहीं है। इससे बहुत गड़बड़ होती है। कोई न कोई निराश करने वाली बात हो ही जाती है, सो हम यीशु में शेष विश्वासियों के साथ इसलिए आराधना करने को नहीं जाते।''

प्रभु ने कलीसिया को *ekklēsia* यानी असली ''संगति'' कहा, जैसा कि इस शब्द का अनुवाद होना चाहिए। अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ''चर्च'' *ekklēsia* से नहीं लिया गया बल्कि इसे जर्मन भाषा तथा मध्य अंग्रेज़ी शब्द *kirche* स्कॉटिश भाषा के *kirk* में लेकर अंग्रेज़ी में ''चर्च'' बना दिया गया। परन्तु ''चर्च'' विचार में *kuriakos* के साथ जुड़ा है जिसका अर्थ है ''प्रभु के लोग'' या केवल ''प्रभु के।'' *Kuriakos* (''प्रभु के'') का इस्तेमाल नये नियम में केवल दो बार हुआ है, जिसमें 1 कुरिन्थियों 11:20 (''प्रभु का भोज'') और प्रकाशितवाक्य 1:10 (''प्रभु का दिन'') में मिलता है। *Ekklēsia* प्रभु की है। (मत्ती 16:18 में यीशु ने इसे ''अपनी कलीसिया'' कहा।) हमें कलीसिया की संगति और वास्तव में ''प्रभु की कलीसिया'' को बनाए रखने के लिए आराधना के लिए इकट्ठे होते रहना आवश्यक है।

उसके चुने हुए लोगों अर्थात पवित्र लोगों के साथ जो उसकी शुद्ध की हुई देह के अंग हैं संगति में रहे बिना हम मसीह के वफ़ादार नहीं हो सकते (इफिसियों 5:25-27)।

### कुछ लोग आराधना को नज़रअंदाज़ क्यों करते हैं? (10:25)

पहली सदी में मसीही लोगों के आराधना को नज़रअंदाज़ करना आरम्भ करने का कारण नहीं बताया गया है। उनके कारण सम्भवतया इक्कीसवीं सदी के आराधना के लिए इकट्ठा होने की उदासीनता के कारणों जैसे ही होंगे। कुछ लोग नहीं चाहते कि लोगों को पता चले कि वे मसीही हैं क्योंकि उन्हें मसीह की कलीसिया से शर्म आती है। कुछ लोग मसीह की कलीसिया के वफ़ादार लोगों को दी गई अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा से बढ़कर थोड़ी देर के प्रलोभनों के साथ संसार को प्राथमिकता देते हैं। औरों को लगता है कि वे आराधना में इकट्ठा होते रहने वाले भाइयों और बहनों से अलग रहकर भी वफ़ादार रह सकते हैं। जैसा कि 10:25 के उपदेश से सुझाव मिलता है, यह एक दुखद गलती है और इससे व्यक्ति 10:26 में बताई गई बेदीनी की ओर जा

सकता है। हमें ऐसे भाइयों की जो यह जोखिम ले रहे हैं सहायता करनी आवश्यक है। इब्रानियों की पुस्तक की बार-बार यही विनती है, "साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर" रहो (3:6)। ऐसा ही विचार 10:23 में व्यक्त किया गया है: "अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें।" लेखक ने यह बात "एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें" (10:25) की शिक्षा देते हुए कही। वफ़ादार रहने का यह प्रोत्साहन मसीह की वफादारी को ध्यान में रखते हुए आया (10:23ख)। वह अपने पिता का वफ़ादार था, क्या हमें भी नहीं होना चाहिए?

कलीसिया/राज्य का आदर्श होना ( 10:25 )

कलीसिया परमेश्वर और मसीह का राज्य है (इफिसियों 3:5)। यदि हम मसीह के हैं तो हम सब उसके राज्य के "लोग" हैं। यदि हमने संसार के ढंगों को छोड़ दिया है तो हम परमेश्वर की मण्डली (*ekklēsia*) अर्थात कलीसिया का भाग हैं। वह राज्य कैसा है या इसे कैसा होना चाहिए? अपनी पुस्तक *अमेज़िंग ग्रेस* में जोनाथन कोज़ोल ने न्यू यॉर्क के दक्षिण ब्रांक्स नगर के गरीब और अपराधग्रस्त इलाके के एक बारह वर्षीय लड़के के बारे में बताया है। अपराध की अन्य कई किस्मों के साथ-साथ उसे गलियों में होने वाली हिंसा और हत्या की जानकारी थी। परन्तु उसे एक अच्छी स्थानीय कलीसिया की दया का अनुभव भी हुआ। उसका नाम एंथनी था और आमतौर पर वह "परमेश्वर के राज्य" की बातें करता था। कोज़ोल ने उसे परमेश्वर के राज्य की परिभाषा लिखने को कहा। पहले तो उसने इनकार कर दिया परन्तु कुछ दिनों के बाद उसने कोज़ोल को वे तीन पृष्ठ दिखाए जो उसने अपनी डायरी में लिखे थे। उसकी परिभाषा का कुछ भाग इस प्रकार था:

> स्वर्ग में कोई हिंसा नहीं होगी। बंदूकें या नशे नहीं होंगे। ... कर नहीं चुकाना पड़ेगा। आप उन सब बच्चों को पहचान लेंगे जो बचपन में ही मर गए थे। यीशु उनके साथ अच्छा होगा और उनके साथ खेलेगा। रात को आएगा और आपके घर में जाएगा।[88]

यह एक सुन्दर विवरण है जो आज भी कलीसिया को देना चाहिए। यह शान्ति की पेशकश करती है जब यह सचमुच में "स्वर्ग की दहलीज़" है। हमें पृथ्वी पर अब परमेश्वर के राज्य में स्वर्ग की शान्ति का कुछ ज्ञान होना आवश्यक है।

"परमेश्वर का घराना [परिवार]" होने के लिए हम सबको व्यक्तिगत रूप में पानी के बपतिस्मे के फाटक के द्वारा विश्वास की उस संगति में आने के कारण मसीह को समर्पित होना आवश्यक है (आयत 22; देखें गलातियों 3:26, 27)। यदि हमने उद्धार की उसकी शर्तों को पूरा नहीं किया है तो हम परमेश्वर तक नहीं पहुंच सकते हैं। हमें "संगति" कैसे कहा जा सकता है यदि हमने एक ही ढंग से उसमें आए नहीं हैं। बपतिस्मा स्पष्ट रूप में मसीह की देह में आने का माध्यम है (1 कुरिन्थियों 12:13)।[89] केवल उसी एक देह में हमें "पूरे विश्वास" की प्राप्ति हो सकती है (10:22)। हमारे लिए आवश्यक है कि "अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें" (10:23)। आशा के साथ हमारा उद्धार होता है (रोमियों 8:23-25) और हम "अनन्त

जीवन की आशा'' में रहते हैं (तीतुस 1:2)। आशा हमारे विश्वास का आधार है।

मण्डली में ही हम एक-दूसरे को प्रेम और भले कार्यों के लिए उकसाते है (10:24); इसे और किसी प्रकार से नहीं किया जा सकता। जो हमें बेहतर सेवा और प्रेम के लिए ''उकसा'' (KJV) सकते हैं, टेलीफोन और ई-मेल के संदेश उनके साथ रू-ब-रू होने का स्थान नहीं ले सकते।

दिन निकट आ रहा है ( 10:25 )

कुछ लोगों का मानना है कि आयत 25 वाला निकट आता ''दिन'' प्रभु की वापसी और/या न्याय का दिन है। हमें नहीं मालूम कि हमारा प्रभु कब वापस आएगा। यह हमारे युग में हो सकता है या ऐसे युग में जो बहुत दूर न हो।

1988 से थोड़ा पहले *एटीएट रीज़ंस द रैप्चर विल अक्कर इन 1988* नामक पुस्तक छपी थी। यदि आप ने इसे पढ़ा हो और इस पर विश्वास किया हो, और वैसा ही न हुआ हो, तो क्या होना था? क्या आप बाइबल के कथित विद्वान पर जिसने पुस्तक लिखी संदेह करते या उन सभी प्रचारकों पर जो हमारे युग के होने वाले अन्त की ओर संकेत देते पवित्र शास्त्र के ''चिह्नों'' को जानने का दावा करते हैं, संदेह करते? क्या आप कभी ऐसे प्रचारक को फिर सुनते? काल्पनिक व्याख्या करने वालों की मूर्खता को दिखाने को छोड़, गलती से किसी का भला नहीं होता।

प्रभु 1988 में या 2000 में नहीं आया, जैसा कि कुछ लोगों ने भविष्यवाणी की थी। अन्त के सम्बन्ध में बाइबल की बातों की व्याख्या करना गलत होगा। बहुत सी भविष्यवाणियां गलत साबित हो चुकी हैं, इस कारण ऐसा प्रचार विश्वास को गिराता है। इस बात का संकेत देने के लिए कि ऐसी घोषणा सही यह कहना है ''हम क्यों बुराई करें [या इसे सिखाएं] कि भलाई निकले'' (रोमियों 3:8)।[10]

यह सिखाना कि हर पीढ़ी अपनी पिछली पीढ़ी से बदतर होती है और अब हम ''अन्तिम दिनों'' में रह रहे हैं, इस कारण 2 तीमुथियुस 3:1-5 को पूरा कर रहे हैं, 10:25 की गलत व्याख्या है। पौलुस ने ''समयों'' या जारी रहने वाले युगों की बात की जब कुछ बातें होनी थीं। 2 तीमुथियुस 3 में वर्णित लोग पौलुस के लिखने के समय पाए जाते थे, जिस कारण उसने तीमुथियुस को चेतावनी दी ''ऐसों से परे रहना'' (3:5)। वह उनसे कैसे परे रह सकता था, यदि उन्होंने इक्कीसवीं सदी तक नहीं आना था? जिन समयों की बात की जा रही है वे मसीह की वापसी से कुछ दिन पहले के अन्तिम समय नहीं बल्कि हर पीढ़ी की बात है जिसमें दुष्ट लोग हमारे आस-पास रहते हैं। वे कब नहीं रहते? कुछ लोग ''बद से बदतर हो जाते है,'' और आम तौर पर हम देखते हैं कि ''... बहुतों का प्रेम ठण्डा हो'' जाता है (मत्ती 24:12)। तौ भी हमें सावधान रहना आवश्यक है क्योंकि पवित्र शास्त्र की गलत व्याख्या खतरनाक हो सकती है।

जैसे कि हमने देखा, 10:25 वाला ''दिन'' 70 ईस्वी में यरूशलेम के गिरने के समय को कहा गया होगा। यह संकेत देते हुए कि उस घटना का समय निकट था, यीशु ने उसके चिह्न बताए (मत्ती 24; मरकुस 13; लूका 21)। यह दिन क्या था जिसके निकट आने को देखा जा सकता था? (1) यह किसी की मृत्यु का दिन नहीं हो सकता था, क्योंकि उस दिन के निकट आने को सब नहीं देखते हैं। (2) यह न्याय का दिन नहीं हो सकता था, क्योंकि किसी को नहीं

मालूम कि वह कब होगा। (3) यह प्रभु का दिन नहीं हो सकता था, क्योंकि इस "निकट आते" दिन से पहले प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन मण्डलियां इकट्ठा होती थीं। (4) यह दिन अवश्य ही वह समय होगा जब रोमी सेनाओं द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी करके उसे नष्ट किया जाना था। यीशु द्वारा पहले से दी गई चेतावनी और चिह्नों से मसीही लोग उस दिन के निकट आने को देख सकते थे। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने तो बाबुल के द्वारा यहूदा के विनाश के सम्बन्ध में हबक्कूक 2:3, 4 को उद्धृत भी कर दिया। वह रोम द्वारा यरूशलेम को बर्बाद किए जाने के लिए इन शब्दों का इस्तेमाल कर रहा होगा।[91]

हमारा परमेश्वर, बदला लेने वाला परमेश्वर है ( 10:26-31 )

विश्वास-त्याग यानी बेदीनी के भयंकर परिणाम का वर्णन 10:26-31 में किया गया है। इस दण्ड का उल्लेख कलीसिया की आराधना सभाओं में भाग लेने में वफ़ादार बने रहने की शिक्षा देने के तुरन्त बाद किया गया। मसीही सभा को नज़रअंदाज़ करने वाला व्यक्ति विश्वासियों से अलग होकर पाप की दलदल में जा सकता है। ऐसे व्यक्ति के दण्ड को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह पुरानी वाचा में दिए गए किसी भी दण्ड से "और भी भारी दण्ड" है (10:29)। कोरह के यह सोच लेने पर कि लोगों की अगुआई करने का काम उसे मिलना चाहिए, परिवार समेत पृथ्वी में समा जाने से भी बुरा है (गिनती 16:1-35)। यह उज्जा को मिलने वाले दण्ड से भयानक होना था, जिसे वाचा के संदूक को छूने के लिए परमेश्वर द्वारा उसे मार दिया गया था (2 शमूएल 6:1-7)। यह सदोम और अमोरा के विनाश और लूत की पत्नी की मृत्यु से भी भयंकर होना था (उत्पत्ति 19)।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि लेखक ने लिखा, "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है" (10:31); "हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है" (12:29)। वह सचमुच में वैसे ही बदला लेगा जैसा उसने बताया है (2 थिस्सलुनीकियों 1:8-10)। इन शिक्षाओं को अच्छी तरह से समझने के बावजूद विश्वास से फिर जाने वाला व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में सबसे घृणित व्यक्ति है जो इस सारे दण्ड को पाने के योग्य हो।

मान लीजिए कि कोई किसी पहाड़ पर चढ़ रहा है और वह चोटी पर पहुंचने के निकट है। उसे पहाड़ की चोटी पर पहले से पहुंच चुके व्यक्ति द्वारा उभरी हुई अन्तिम चट्टान के आगे खींचा जाना है। अचानक चढ़ने वाला यह निर्णय लेता है कि वह और ज़ोर नहीं लगा सकता और रस्सी को छोड़ देता है। मसीही व्यक्ति के साथ जो बेदीनी के खतरे में है, ऐसा ही होता है! इब्रानियों की पुस्तक का लेखक पुकार रहा था, "यदि तुम अब गिर गए तो फिर बचना नामुमकिन है!"[92]

बेदीनी अनन्त उद्धार पर उसकी पकड़ को खो देती है और वह सदा के लिए खो जाता है। ऐसी स्थिति में बना रहने वाला व्यक्ति उद्धार के अपने अवसर को खो देता है क्योंकि और कोई तजवीज़ नहीं है।

भयभीत करने वाली उम्मीद ( 10:27 )

पौलुस को न्याय के दिन का बहुत कुछ पता था। इसके भयभीत करने वाले परिणामों के कारण उसने "लोगों को समझाते" रहने को चुना (2 कुरिन्थियों 5:10, 11)। इसीलिए पौलुस

ने लोगों को समझाने के लिए कि वे अपने पापों से मन फिराएं, नरक और न्याय के भय का इस्तेमाल किया। ऐसा उसने फेलिक्स के साथ किया, जिससे वह हाकिम ''भयभीत'' हो गया (प्रेरितों 24:25)। अधर्मियों को अनन्त दण्ड की चेतावनियां देते रहना आवश्यक है।

इस न्याय को पाने का पाप ''अनन्त पाप'' की तरह की देखा जाए, जिसकी कोई क्षमा नहीं है (मरकुस 3:28, 29)। यह अनन्त है क्योंकि इतना कठोर हो जाने वाला व्यक्ति इससे मन नहीं फिरा सकता। वह उस स्थिति में नरक में जाने के अलावा और कहीं नहीं जा सकता। उसने अपने ''विश्वास के गुण'' को खो दिया है और उसका विवेक लोहे से दागा गया है, जिस कारण वह बदल नहीं सकता।

### जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना ( 10:31 )

लेखक का इरादा अपने पाठकों को एक सच्चे और जीवते परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए डराने का था। नरक पर प्रवचन आज के समय में प्रसिद्ध नहीं है। प्रचारकों को लोगों को नरक से दूर रखने के लिए डराने की बात बचकाना लगती है, परन्तु लोगों को स्वर्ग में जाने के लिए न डराकर हम उन्हें नरक से दूर रखने से डराने में भी असफल रहते हैं। लोगों के जीवन की गड़बड़ियां और इसकी उन्हें जानकारी न होना, मांग करता है कि हम प्रचार के द्वारा बताएं कि दण्ड का अर्थ क्या होता है।

नया नियम आम तौर पर भयभीत करने वाले शब्दों में पीड़ा के उस स्थान की बात करता है। यीशु ने कई बार इसका उल्लेख किया (मत्ती 5:22; 10:28; मरकुस 9:47, 48)। मसीह का प्रचार करने का अर्थ, उसके पूरे संदेश को सुनाना है, जिसमें हम केवल उतना ही न बताएं जितना हमें लोगों को आकर्षित करने वाला लगे।

### कष्ट सहने वाले पवित्र लोगों के साथ एक ( 10:32-34 )

साथी पवित्र लोगों के कष्ट, निंदा और कैद में सहभागी होकर इब्रानी मसीही सचमुच में अपने इलाके की कलीसिया के साथ अपने आपको मिला रहे थे। उन्हें प्रभु के रूप में यीशु की आराधना करने के लिए यह सताव नहीं हुआ था; परन्तु अपने साथी मसीही लोगों के कारण, और उनकी सहायता करने के लिए, वे उनके दु:खों में सहभागी हुए और इस प्रकार उनके साथ मिल गए। हमें यह नहीं बताया गया कि पौलुस को छोड़ कोई और मसीही किसी नये इलाके में जाकर वहां ''कलीसिया के साथ'' मिला हो (प्रेरितों 9:26-28), परन्तु हम मान सकते हैं कि बहुत से लोग मिले होंगे। अन्य मसीही लोगों के साथ स्वेच्छा से दु:ख सहना जबकि वे अपने घरों में आराम से रहकर जोखिम से बच सकते थे, यह दिखाता है कि उन्होंने इस बात को समझ लिया था कि मसीही संगति सचमुच में कितनी महत्वपूर्ण है। यह संगति केवल स्थानीय मण्डली में रहकर मिल सकती है।

### हानियों को आनन्द से ग्रहण करना ( 10:34 )

आग, प्रलय, या लूटपाट से सम्पत्ति की हानि को स्वीकार करना कठिन है। कुछ लोग हानि से मिलने वाले दु:ख से कभी उबर नहीं पाते, परन्तु मसीही लोग उबर सकते हैं और उबरते हैं।

क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें "घर सुधार" मिलने वाला है (2 कुरिन्थियों 5:1) और यह संसार उनका असली देश नहीं है (फिलिप्पियों 3:20), किसी उत्तम की राह देखते रहते हैं। जब व्यक्ति आत्मिक और अनन्त बातों को थोड़ी देर रहने वाली बातों से अधिक महत्वपूर्ण मानता है तो उसने जीवन का संग्राम लगभग जीत लिया है (2 कुरिन्थियों 4:16–18)। हम हर चीज़ की हानि को आनन्द से ले सकते हैं जैसे इन आरम्भिक पवित्र लोगों ने लिया। वे रोज़ चिल्लाते नहीं थे, "हम कितने दुःखी हैं! हमारा सब कुछ छिन गया है!" वे जानते थे कि उनका खजाना स्वर्ग में है (मत्ती 6:19, 20)। वे कहते होंगे कि "हमारे पास वह खजाना है जिसे संसार छीन नहीं सकता।" इस पुराने गीत में एक सुन्दर विचार व्यक्त किया गया है:

सामान को और रिश्तेदारों को जाने दो।
इस नाशवान जीवन को भी;
वे देह को मार सकते हैं,
परमेश्वर की सच्चाई सर्वदा बनी रही है;
उसका राज्य सदा का है।[93]

जब लगता है कि पारिवारिक झगड़े, आर्थिक तंगी और कलीसिया की समस्याओं ने हमें घेर लिया है तो हम परमेश्वर के सामने पुकारते हैं, जिसके हाथ में सब कुछ है। वह "सब बातों को मिलाकर उनसे भलाई ही को उत्पन्न करता है, उनके लिए जो उससे प्रेम रखते और उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए है" (रोमियों 8:28)। इब्रानी मसीही लोगों ने बहुत दुःख सहा था (10:32)। उनके उदाहरण को ध्यान में रखते हुए हमें हर हाल में वफ़ादार बने रहने में मदद मिल सकती है। जब स्वर्ग हमारी राह देख रहा है, तो हम पृथ्वी पर आनन्द से किसी भी हानि का सामना कर सकते हैं।

सुसमाचार प्रचारक का काम ( 10:32, 33 )

प्रभु द्वारा पौलुस को स्वयं बताया गया था कि उसका काम है "कि तू [अन्यजातियों] की आंखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं" (प्रेरितों 26:18)। लोगों को यह समझाना कि उनके पाप दण्ड के योग्य हैं उन्हें मसीह की ओर लाने की मुख्य बात है। वे अन्धकार में है और केवल सच्चाई के द्वारा समझाने से ही उन्हें विनाश के जीवन को छोड़कर उद्धारकर्त्ता के सामने विनम्रता से झुक जाना सम्भव हो सकता है। उनकी आंखें पौलुस द्वारा किए जाने वाले प्रचार की तरह खुल जानी चाहिए ताकि वे रोशनी देख सकते। पवित्र शास्त्र में इस बात का संकेत भी नहीं दिया गया कि लोगों के लिए उस काम को आत्मा ने करना था। शैतान द्वारा पूरी तरह से भरमाए गए लोग अपने अन्धे होने को देख नहीं पाते हैं क्योंकि उनके मन अन्धकार में हैं और वे साफ-साफ नहीं देख सकते हैं।

दो काम करके हम संसार की आंखों को खोल सकते हैं: (1) यीशु के सरल सुसमाचार को सुनाकर और (2) इसे जीकर। जबर्दस्ती, चाहे वे विवाह के सम्बन्ध में सरकारी नियम लागू

करवाकर ही क्यों न हो, यह काम नहीं कर सकते। हमें संसार के हाकिमों से मसीही नियमों को लागू करवाने की कभी उम्मीद नहीं करनी चाहिए। पौलुस की तरह हम यीशु की शिक्षा दें ताकि लोगों को पता चल सके कि उनके लिए उसकी क्या इच्छा है और वे अन्धकार से ज्योति में लौट आएं।

---

टिप्पणियां

[1]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 183. 13:15, 16 में स्तुति और सेवा के आत्मिक बलिदान की बात की गई है। [2]NIV में ''के लिए'' को नज़रअंदाज़ किया गया है। [3]नील आर. लाइटफुट, *एवरीवन'स गाइड टू हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 2002), 128. [4]फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 389. [5]जिम्मी ऐलन, *सर्वे ऑफ़ हिब्रूज़,* 2रा संस्क. (सरसी, आरकैंसा: लेखक के द्वारा, 1984), 107. [6]केन्नथ सैमुएल वुएस्ट, *हिब्रूज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फ़ॉर द इंग्लिश रीडर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1951), 172. [7]जिम गर्डवुड एण्ड पीटर वर्करुइस, *हिब्रूज़,* द कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1997), 309. [8]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 201. [9]इससे यह प्रश्न उठता है कि ये ''सेवा करने वाले'' यानी आराधक (10:2) थे या फिर स्वयं याजक। यदि इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठक याजक थे, तो इससे उन्हें अपने काम और आराधना की निर्बलता को समझने में सहायता मिलनी थी। [10]थॉमस जी. लॉन्ग, *हिब्रूज़,* इंटरप्रिटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1997), 101.

[11]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 184. [12]ह्यूजस, 393. [13]एच. एल. एलिसन, *द सैंट्रैलिटी ऑफ़ द मसयानिक आइडिया फ़ॉर द ओल्ड टैस्टामैंट* (लंदन: थियोलॉजिकल स्टूडेंट्स फैलोशिप, 1953), 19. [14]लॉन्ग, 103. [15]गर्डवुड एंड वर्करुइस, 310. [16]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 185. भजन संहिता में जो यह लगता है कि भजन लिखने वाला परमेश्वर से बात कर रहा है परन्तु वचन का यही इस्तेमाल इस समय चलन में होगा। [17]गर्डवुड एंड वर्करुइस, 311. [18]एफ़. एफ़. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 232. [19]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 344–45. [20]भजन संहिता 40:6 में लेखक ने LXX के *ēitēsas* में (''तू ने चाहा'') को इब्रानियों 10:6 में *eudokēsas* (''तू प्रसन्न न हुआ'') में बदल दिया। (*द न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री,* संपा. एफ़. एफ़. ब्रूस, एच. एल. एलिसन एंड जी. सी. डी. हाउले [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1986], 1524 में गेरल्ड एफ़. हाअर्थॉर्न, ''हिब्रूज़।'')

[21]इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने बलिदानों की आज्ञा नहीं दी थी। [22]गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एण्ड एक्सेजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (मोबर्ली, मिज़ोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992), 170. [23]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 185, एन. 3. [24]गुथरी, 205. [25]वही। उदाहरण के लिए, *anaireō* का इस्तेमाल राजा हेरोदेस द्वारा नवजात शिशुओं की हत्या के लिए किया गया (मत्ती 2:16)। ''नाश'' जैसा मज़बूत शब्द भी सही हो सकता है। (गर्डवुड एंड वर्करुइस, 312.) [26]रीस, 171. [27]यह यूनानी शब्द 7:27 और 9:12 में भी मिलता है। [28]इसका अर्थ यही होगा कि पवित्र किया जाना आरम्भिक विश्वास करने और बपतिस्मा लेने के बाद होता है। उस समय व्यक्ति का ''उद्धार'' होता है जो कि सदा के लिए नहीं बल्कि तब तक के उसे पापों से (मरकुस 16:15, 16)। [29]इब्रानियों 10:14 इसी प्रकार से पवित्र किए जाते रहने का संकेत देता है। NIV में ''पवित्र किए जा रहे हैं'' है। [30]*Ephapax,* जो ''सदा सदा के लिए'' मसीह के काम पर ज़ोर देता है, महा याजक के काम के उलट है जो हर साल बलिदान चढ़ाने आता था। इस अंतर के बारे में ज्ञानवान यहूदियों ने ही प्रश्न उठाना था। (मोज़ज़ स्टुअर्ट, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* [लंदन: विलियम टेग्ग एंड कं., 1856], 459–60.)

[31]रीस, 167, एन. 1. [32]ब्रूस, 239. [33]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 187. [34]यह वर्तमान कृदंत है, जिस का अर्थ यह हुआ कि यह निरन्तर चलने वाली क्रिया है। इस आयत में ''पवित्र किए जाते हैं'' और ''सिद्ध कर दिया है'' दो अलग अलग कालों में हैं। दूसरी अभिव्यक्ति ''पिछले, निरन्तर प्रभावों वाले पूर्ण हो चुके कार्य'' का संकेत देती है जबकि पहली अभिव्यक्ति ''किसी प्रगतिशील घटना के अधूरे कार्य [में] वर्तमान ''है'' ... स्पष्ट [है] कि विश्वासी का उद्धार पूर्ण हो चुका तथ्य यानी, हो रही घटना और भविष्य का वायदा दोनों'' है (गर्डवुड एंड वर्करुइस, 315)। [35]स्टुअर्ट, 461. [36]ह्यूजस, 403. [37]लॉन्ग, 104. [38]ब्रूस, 243 में यह शीर्षक दिया गया है। [39]गर्डवुड एंड वर्करुइस, 277 से लिया गया। [40]पॉल एलिंगवर्थ एंड यूजीन एलबर्ट निडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, हेल्प्स फॉर ट्रांसलेटर्स (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1983), 228.

[41]गुथरी, 211. [42]भावनाएं विश्वास से चलनी चाहिए न कि किसी और तरीके से। [43]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 188. [44]ह्यूजस, 407. [45]जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ दैट प्लीज़ज़ गॉड* (व्हीटन, इलिनोय: टिण्डेल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 269–70. [46]यहां यूनानी व्याकरण में अवश्यमाननीय कथन का ज़ोर है। (गर्डवुड एंड वर्करुइस, 319.) [47]ह्यूजस, 405. [48]रीस, 177. [49]ब्रूस, 250–51. मोज़ज़ स्टुअर्ट ने कहा, ''मुझे लगता है कि यहां स्पष्ट संकेत मसीही बपतिस्मे के आरम्भिक संस्कार में जल के उपयोग का है'' (स्टुअर्ट, 467)। [50]गुथरी, 214.

[51]अधिकतर टीकाकार मानते हैं कि यह बपतिस्मे का एक संकेत है। संदेह करने वालों में कैल्विन ही था जिसे लगा कि ''शुद्ध जल'' परमेश्वर के आत्मा के लिए कहा गया है। (रीस, 178, एन. 34.) [52]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 190. [53]हाअर्थॉर्न, 1525. [54]''जल को 'शुद्ध' कहा गया है क्योंकि बपतिस्मे के समय व्यक्ति का सम्बन्ध परमेश्वर के साथ शुद्ध किया जाता है'' (ऐलन, 112). [55]''उस्काना'' (सही शब्द ''उकसाना''–अनुवादक) जो 1611 में छपे बाइबल के KJV अनुवाद से लिया गया है, का अर्थ बदल गया है। तब ''उकसाना'' के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द provoke का अर्थ ''कार्यवाही के लिए भड़काना'' था (रीस, 179, एन. 45)। [56]ब्रूस, 253. [57]वुएस्ट, 182. विलियम मैनसन का कहना था कि इब्रानियों की पत्री का लेखक ''यहूदी आराधनालय से मसीही लगाव'' की बात कर रहा था, परन्तु साथ ही उसने कहा कि ''शब्द का अर्थ केवल इकट्ठे होना है'' और यह कि ''लेखक की भाषा में ऐसा कुछ भी नहीं है कि हम उसके अर्थ को इतना लम्बा खींच दें'' (विलियम मैनसन, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* [लंदन: हॉडर एंड स्टाउटन, 1951], 69)। [58]नये नियम में केवल एक और बार 2 थिस्सलुनीकियों 2:1 में प्रभु के आने और ''हमारे उसके पास इकट्ठा होने'' की बात है। इसके लिए इकट्ठा होने के लिए ''आराधनालय'' जैसी वास्तविक जगह की आवश्यकता नहीं है। [59]स्टुअर्ट, 469. [60]लाइटफुट, *एवरीवन'स गाइड टू हिब्रूज़*, 142. वचन में कम से कम इस प्रकार के पाप को ''पूरा ज़ोर मिल जाता है'' (साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्सपोज़िशन टू द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984], 293)।

[61]10:26 में ''पहिचान'' शब्द अधिक व्यक्तिगत और नज़दीकी जानकारी का पता देता है। (फ्रैंज़ डेलिश, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, अनु. थॉमस एल. किंग्सबरी [एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1868; रिप्रिंट, मिनियापोलिस: क्लॉक एंड क्लॉक क्रिश्चियन पब्लिशर्स, 1978], 2:184–85.) इसका अर्थ है *''पहचान, स्वीकृति''* (किस्टमेकर, 297)। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि विचाराधीन लोग सचमुच में परिवर्तित हुए थे। [62]गुथरी, 217. ''पहिचान'' के लिए यहां *epignōsis* शब्द का इस्तेमाल हुआ है जो कि इस पत्र में केवल वहीं पर है। [63]ड्रेपर, 277. [64]किस्टमेकर का कहना है कि ''वह उसी पाप की ओर ध्यान दिलाता है जिसे यीशु पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप कहता है (मत्ती 12:32; मरकुस 3:29)।'' [65]ISV में इसका अनुवाद ''पाप करते रहना चुनना'' हुआ है जबकि बाद के मान्य अंग्रेज़ी अनुवाद में ''जान-बूझकर पाप करते रहना'' है। [66]आर. सी. एच. लेंसकी, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़ एंड ऑफ़ द एपिस्टल ऑफ़ जेम्स* (कोलम्बस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946), 359–60. यूनानी भाषा में यह अभिव्यक्ति मत्ती 5:13; 7:6; लूका 8:5; 12:1; इब्रानियों 10:29 में पांच बार मिलती है। पुराने नियम में 2 राजाओं 9:33; यशायाह 26:6; दानिय्येल 8:10; मीका 7:10; मलाकी 4:3 में विभिन्नताएं मिलती हैं। [67]गुथरी, 219. [68]ह्यूजस, 424. [69]बेदीन यानी विश्वास–त्याग करने वाले का पवित्र किया जाना आवश्यक है। यीशु ने तो फिर कभी पाप नहीं किया तो उसे पवित्र किए जाने की आवश्यकता कैसे हो सकती है? उसे अपनी सेवकाई के लिए अलग किए जाने के अर्थ में ''पवित्र किया गया'' था (यूहन्ना 17:19), परन्तु उसे अपने ही लहू के द्वारा पवित्र किए जाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। (रीस, 184, एन. 70.) [70]ह्यूजस, 423.

[71]इस प्रकार की वाक्य रचना का इस्तेमाल NEB, ESV और JB में हुआ है। मेकोर्ड के अनुवाद में "अनुग्रह के आत्मा का ठट्ठा उड़ाया" है; नये नियम में और कहीं पर भी *enubrizō* का इस्तेमाल नहीं हुआ है। (ह्यूगो मेकोर्ड, *मेक्रोर्ड'स न्यू टैस्टामैंट ऑफ़ द एवरलास्टिंग गॉस्पल* [हैंडरसन, टैनिसी: फ्रीड-हार्डमैन कॉलेज, 1988], 430.) [72]लेंसकी, 359. [73]यह पाप पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप जैसा ही है। (ब्रूस, 259-60; किस्टमेकर, 295.) जब अविश्वासियों ने यीशु के आश्चर्यकर्मों को शैतान के काम बताया, तो यीशु ने उन्हें "पवित्र आत्मा की निन्दा" न करने की चेतावनी दी। आत्मा उद्धार की परमेश्वर की अन्तिम पेशकश देता है; जो भी उसकी पेशकश को ठुकराता है उसके प्राण के लिए कोई आशा नहीं है। [74]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 195, एन. 13; ह्यूजस, 425, एन. 22. किस्टमेकर इसे कलीसिया में एक आम "कहावत" मानता था। (किस्टमेकर, 296.) [75]"जीवते परमेश्वर" शब्द इब्रानियों की पुस्तक में तीन और जगह 3:12, 9:14, 12:22 में मिलता है। यहूदी लोग अपने परमेश्वर को एकमात्र "जीवते परमेश्वर" के रूप में जानते थे। [76]थियोडोर एच. रौबिन्सन, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (न्यू यार्क: हार्पर एंड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1933), 151. [77]मिलिगन, 376-77. मूल में है, "... धर्मी अपनी वफ़ादारी से जीवित रहेगा" (ब्रूक फॉस वेस्टकोट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड एस्सेस* [लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973], 337)। [78]ऐ सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 115, एन. [79]ब्रूस, 256. [80]जोसेफ़स *वार्स* 2.19.7. यरूशलेम के विरुद्ध सेशियस के आक्रमण के सम्बन्ध में जोसेफ़स ने यह व्याख्या दी है: "यदि [सेल्सियस] घेराबन्दी थोड़ी और देर तक रहने देता, तो निश्चय ही उस ने नगर पर कब्ज़ा कर लिया [होता]; परन्तु, मुझे लगता हे कि परमेश्वर के मन में पहले से ही नगर और मन्दिर के प्रति घृणा के कारण, उसे उसी दिन युद्ध बन्द करने से रोक दिया गया" (जोसेफ़स *वार्स* 2.19.6)।

[81]यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 3.5. [82]लाइटफुट, *एवरीवन'स गाइड टू हिब्रूज़,* 128-29 से लिया गया। [83]रमंड ब्राउन, *द मैसेज ऑफ़ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1982), 176. [84]गुथरी, 209. [85]वेस्टकॉट, 316. [86]"उपदेश के उस सांचे [*tupos*] को" मानने का अर्थ "यीशु मसीह में" और "उसकी मृत्यु में बपतिस्मा" लेना है (रोमियों 6:3, 4)। जब हम सुसमाचार की आज्ञा को मानते हैं तो हम उस उपदेश के *सांचे* को मान रहे होते हैं। [87]क्रिया शब्द *agapaō* 1:9 और 12:6 में दो बार मिलता है। [88]जोनाथन कोज़ोल, *अमेज़िंग ग्रेस: द लाइव्स ऑफ़ चिल्ड्रन एंड द क्रॉन्शियंस ऑफ़ ए नेशन* (न्यू यॉर्क: हार्परकोलिन्स पब्लिशर्स, 1995), 238. [89]1 कुरिन्थियों 12:13 पानी के ही बपतिस्मे की ही बात होगी न कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की। यदि यह पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की बात होती तो हर किसी को उसी प्रकार से बपतिस्मा दिया जाता। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा जिसकी प्रतिज्ञा प्रेरितों को दी गई थी (प्रेरितों 1:6-8) केवल उन्हीं को मिला था (प्रेरितों 2:1-4)। प्रथम अन्यजाति परिवर्तितों को उसी प्रकार से आत्मा का एक माप दिया गया था (प्रेरितों 10:43-47; 11:15, 16), परन्तु उन्हें प्रेरित वाले चिह्न दिखाने की सामर्थ नहीं मिली थी (देखें 2 कुरिन्थियों 12:12)। कुरनेलियुस और उसके परिवार का "बपतिस्मा" यह सुझाव नहीं देता है कि हर किसी को "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा" मिलने वाला था। यहूदियों को यह कायल करने के लिए कि परमेश्वर ने अन्यजातियों को स्वीकार कर लिया है, यह आश्चर्यकर्म आवश्यक था। [90]बेशक परमेश्वर ने अहाब को झूठ पर विश्वास कराने दिया क्योंकि उसने सच्चाई के हर रूप को जो परमेश्वर के नबियों की ओर से मिला था, ठुकरा दिया (1 राजाओं 22:13-28), परन्तु परमेश्वर झूठ नहीं बोलता है (इब्रानियों 6:18)। अहाब की कहानी ज़बर्दस्त ढंग से 2 थिस्सलुनीकियों 2:9-12 की सच्चाई को समझाती है कि जो लोग सच्चाई से प्रेम नहीं करते हैं परमेश्वर उन्हें भरमाने वाले प्रभावों पर विश्वास करने देगा।

[91]ऐलन, 114-15. [92]लॉन्ग, 110 से लिया गया। [93]मार्टिन लूथर, *"ए माइटी फोटरेस," सॉन्ग्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक. एवं संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशर्स, 1994)।